INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान

ग्राम विकास अधिकारी (VDO)

(मुख्य परीक्षा हेतु)

राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग (RSSB)

भाग – 4

भारत + राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान ग्राम विकास अधिकारी (मुख्य परीक्षा हेतु)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान ग्राम विकास अधिकारी (मुख्य परीक्षा)"** में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Online Order करें - https://shorturl.at/qClJS

WhatsApp करें - https://wa.link/9h4q2x

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

	भारतीय राजनैतिक व सांस्कृतिक इतिहास के लैंडमार्क, मुख्य स्मारक साहित्यिक कार्य	
क्र.सं.	अध्याय	पेज नंबर
1.	इतिहास के स्त्रोत	1
2.	सिन्धु सभ्यता का इतिहास एवं लैंडमार्क	6
3.	वैदिक सभ्यता	9
4.	धार्मिक आंदोलन	12
5.	छठी शताब्दी ई.पू. का इतिहास	17
6.	मौर्य काल एवं मौर्योत्तर काल	18
7.	गुप्त काल एवं गुप्तोत्तर काल	21
8.	कुषाण एवं सातवाहन वंश	23
	मध्यकालीन भारत	
1.	भारत पर विदेशी आक्रमण	25
2.	दिल्ली सल्तनत	27
3.	मध्य कालीन भारत में धार्मिक आंदोलन	36
4.	बहमनी और विजयनगर साम्राज्य	39
5.	मुग़ल काल (1526-1707)	41
	आधुनिक भारत का इतिहास	
1.	यूरोपीय व्यापार का प्रारम्भ	49
2.	गवर्नर जनरल	53
3.	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन	59
4.	भारतीय पुनर्जागरण	61
5.	राष्ट्रीय एकता व स्वतंत्रता के लिए संघर्ष	62

6.	गाँधी युग और असहयोग आंदोलन	65
7.	क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक	70
	राजस्थान का इतिहास और संस्कृति	
1.	राजस्थान इतिहास के स्त्रोतः-	74
2.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएं	86
3.	गुर्जर प्रतिहार वंश	93
4.	मेवाड़ का इतिहास	96
5.	मारवाड़ का इतिहास	113
6.	राजस्थान के वंश	133
7.	मुगल साम्राज्य और राजस्थान	137
8.	मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था	141
9.	स्वतंत्रता आंदोलन व राजनैतिक जाग्रति	155
10.	राजस्थान में 1857 की क्रांति	156
11.	राजस्थान में किसान एवं आदिवासी आंदोलन	164
12.	राजस्थान में प्रजामंडल	173
13.	राजनैतिक एकता	175
	राजस्थान की संस्कृति	
1.	बोलियाँ एवं साहित्य	179
2.	संगीत, / (लोक गीत)	187
3.	लोक नृत्य	192
4.	लोक नाट्य	195
5.	धार्मिक विश्वास संप्रदाय, संत,	198
6.	राजस्थान के कवि	205
7.	वीर पुरुष	207
8.	लोक देवता व लोक देवियाँ	215
9.	हस्तकला	222

10.	मेले एवं त्यौहार	222
11.	लोक परम्परा एवं रीति रिवाज	232
12.	पोषक / वस्त्र एवं आभूषण	241
13.	विशेषता आदिवासी व जनजाति के संदर्भ में	245

भारतीय राजनैतिक व सांस्कृतिक इतिहास के लैंडमार्क, मुख्य स्मारक साहित्यिक कार्य

अध्याय – 1
इतिहास के स्त्रोत

प्राचीन इतिहास के स्त्रोत

भारत के इतिहास के सम्बन्ध के अनेकों स्त्रोत उपलब्ध हैं, कुछ स्त्रोत काफी विश्वसनीय व वैज्ञानिक हैं, अन्य मान्यताओं पर आधारित हैं।प्राचीन भारत के इतिहास के सम्बन्ध में जानकारी के मुख्य स्त्रोतों को 3 भागों में बांटा जा सकता है, यह 3 स्त्रोत निम्नलिखित हैं :

1. पुरातात्विक स्त्रोत
2. साहित्यिक स्त्रोत
3. विदेशी स्त्रोत

(i) पुरातात्विक स्त्रोत (Archaeological Sources)

पुरातात्विक स्त्रोत का सम्बन्ध प्राचीन अभिलेखों, सिक्कों, स्मारकों, भवनों, मूर्तियों तथा चित्रकला से है, यह साधन काफी विश्वसनीय हैं। इन स्त्रोतों की सहायता से प्राचीन काल की विभिन्न मानवीय गतिविधियों की काफी सटीक जानकारी मिलती है। इन स्त्रोतों से किसी समय विशेष में मौजूद लोगों के रहन-सहन, कला, जीवन शैली व अर्थव्यवस्था इत्यादि का ज्ञान होता है। इनमे से अधिकतर स्त्रोतों का वैज्ञानिक सत्यापन किया जा सकता है।

अभिलेख (Inscriptions)

- भारतीय इतिहास के बारे में प्राचीन काल के कई शासकों के अभिलेखों से काफी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है। यह अभिलेख पत्थर, स्तम्भ, धातु की पट्टी तथा मिट्टी की वस्तुओं पर उकेरे हुए प्राप्त हुए हैं। इन प्राचीन अभिलेखों के अध्ययन को पुरालेखशास्त्र कहा जाता है, जबकि इन अभिलेखों की लिपि के अध्ययन को पुरालिपिशास्त्र कहा जाता है। जबकि अभिलेखों के अधयरन को Epigraphy कहा जाता है। अभिलेखों का उपयोग शासकों द्वारा आमतौर पर अपने आदेशों का प्रसार करने के लिए करते थे।
- यह अभिलेख आमतौर पर ठोस सतह वाले स्थानों अथवा वस्तुओं पर मिलते हैं, लम्बे समय तक अमिट्य बनाने के लिए इन्हें ठोस सतहों पर लिखा जाता है। इस प्रकार के अभिलेख मंदिर की दीवारों, स्तंभों, स्तूपों, मुहरों तथा ताम्रपत्रों इत्यादि पर प्राप्त होते हैं। यह अभिलेख अलग-अलग भाषाओँ में लिखे गए हैं, इनमे से प्रमुख भाषाएँ संस्कृत, पाली और संस्कृत हैं, दक्षिण भारत की भी कई भाषाओँ में काफी अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
- भारत के इतिहास के सम्बन्ध में सबसे प्राचीन अभिलेख सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त हुए हैं, यह अभिलेख औसतन 2500 ईसा पूर्व के समयकाल के हैं। सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि अभी तक डिकोड न किया जाने के कारण अभी तक इन अभिलेखों का सार अभी तक ज्ञात नहीं हो सका है। सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि में प्रतीक चिन्हों का उपयोग किया गया है, और अभी तक इस लिपि का डिकोड नहीं किया जा सका है।
- पश्चिम एशिया अथवा एशिया माइनर के बोंगज़कोई नामक स्थान से भी काफी प्राचीन अभिलेख प्राप्त हुए हैं, हालांकि यह अभिलेख सिन्धु घाटी सभ्यता के जितने पुराने नहीं हैं।बोंगज़कोई से प्राप्त अभिलेख लगभग 1400 ईसा पूर्व के समयकाल के हैं। इन अभिलेखों की विशेष बात यह है कि इन अभिलेखों में वैदिक देवताओं इंद्र, मित्र, वरुण तथा नासत्य का उल्लेख मिलता है।
- ईरान से भी प्राचीन अभिलेख नक्श-ए-रुस्तम प्राप्त हुए हैं, इन अभिलेखों में प्राचीन काल में भारत और पश्चिम एशिया के सम्बन्ध में वर्णन मिलता है। भारत के प्राचीन इतिहास के अधययन में यह अभिलेख अति महत्वपूर्ण हैं, इनसे प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था, व्यापार इत्यादि के सम्बन्ध में पता चलता है।
- ब्रिटिश पुरातत्वविद् जेम्स प्रिन्सेप ने सबसे पहले 1837 में अशोक के अभिलेखों को डिकोड किया। यह अभिलेख सम्राट अशोक द्वारा ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण करवाए गए थे। अभिलेख उत्कीर्ण करवाने का मुख्य उद्देश्य शासकों द्वारा अपने आदेश को जन-सामान्य तक पहुँचाने के लिए किया जाता था।
- सम्राट अशोक के अतिरिक्त अन्य शासकों ने भी अभिलेख उत्कीर्ण करवाए, यह अभिलेख सम्राट द्वारा किसी क्षेत्र पर विजय अथवा अन्य महत्वपूर्ण अवसर पर उत्कीर्ण करवाए जाते थे। प्राचीन भारत के सम्बन्ध कुछ महत्वपूर्ण अभिलेख इस प्रकार हैं – ओडिशा के खारवेल में हाथीगुम्फा अभिलेख, रुद्रदमन द्रारा उत्कीर्ण किया गया जूनागढ़ अभिलेख, सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी का नासिक में गुफा में उत्कीर्ण किया गया अभिलेख, समुद्रगुप्त का प्रयागस्तम्भ अभिलेख, स्कंदगुप्त का जूनागढ़ अभिलेख, यशोवर्मन का मंदसौर अभिलेख, पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल अभिलेख, प्रतिहार सम्राट भोज का ग्वालियर अभिलेख तथा विजयसेन का देवपाड़ा अभिलेख।
- अधिकतर प्राचीन अभिलेखों में प्राकृत भाषा का उपयोग किया गया है, अभिलेख सामान्यतः उस समय की प्रचलित भाषा में खुदवाए जाते थे। कई अभिलेखों में संस्कृत भाषा में भी सन्देश उत्कीर्ण किये गए हैं। संस्कृत का उपयोग अभिलेखों में ईसा की दूसरी शताब्दी में दृश्यमान होता है, संस्कृत अभिलेख का प्रथम प्रमाण जूनागढ़ अभिलेख से मिलता है, यह अभिलेख संस्कृत भाषा में लिखा गया था। जूनागढ़ अभिलेख 150 ईसवी में शक सम्राट रुद्रदमन द्वारा उत्कीर्ण करवाया गया था। रुद्रदमन का शासन काल 135 ईसवी से 150 ईसवी के बीच था।

a) सिक्के (Coins)

- प्राचीन काल में लेन-देन के लिए उपयोग की जाने वाली वस्तु विनिमय व्यवस्था (Barter System) के बाद सिक्के

प्रचलन में आये। यह सिक्के विभिन्न धातुओं जैसे सोना तांबा, चाँदी इत्यादि से निर्मित किये जाते थे।

- प्राचीन भारतीय सिक्कों की एक विशिष्टता यह है कि इनमे अभिलेख नहीं पाए गए हैं। आमतौर प्राचीन सिक्कों पर चिह्न पाए गए हैं। इस प्रकार से सिक्कों को आहत सिक्के कहा जाता है। इन सिक्कों का सम्बन्ध ईसा से पहले 5वीं सदी से है। उसके पश्चात् सिक्कों में थोडा बदलाव आया, इन सिक्कों में तिथियाँ, राजा तथा देवताओं के चित्र अंकित किये जाने लगे। आहत सिक्कों के सबसे प्राचीन भंडार पूर्वी उत्तर प्रदेश तथा मगध से प्राप्त हुए हैं।
- भारत में स्वर्ण मुद्राएं सबसे पहले हिन्द-यूनानी शासकों ने जारी की, और इन शासकों ने सिक्कों के निर्माण में "डाई विधि" का उपयोग किया।
- कुषाण शासकों द्वारा जारी की गयी स्वर्ण मुद्राएं सबसे अधिक शुद्ध थी।
- जबकि गुप्त शासकों द्वारा सबसे ज्यादा मात्र में स्वर्ण मुद्राएं जारी की।
- सातवाहन शासकों ने सीसे की मुद्राएं जारी की।

प्राचीन भारत की जानकारी के लिए अन्य उपयोगी पुरातात्विक स्त्रोत

- अभिलेख एवं सिक्कों से प्राचीन काल के सम्बन्ध में काफी सटीक जानकारी प्राप्त होती है। लेकिन अभिलेखों और सिक्कों के अलावा अन्य महत्वपूर्ण स्त्रोत भी हैं जिनसे प्राचीन काल के सम्बन्ध में उपयोगी जानकारी प्राप्त होती है, इन स्त्रोतों में इमारतें, मंदिर, स्मारक, मूर्तियाँ, मिट्टी से बने बर्तन तथा चित्रकला प्रमुख है।
- प्राचीनकाल की वास्तुकला की जानकारी के लिए इमारतें जैसे मंदिर व भवन काफी उपयोगी स्त्रोत हैं। वास्तुकला की जानकारी के साथ-साथ इन इमारतों से उस समय की सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक व्यवस्था की भी जानकारी मिलती है।
- प्राचीन भारत की जानकारी के सम्बन्ध में स्मारक अति महत्वपूर्ण है, इन स्मारकों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है – देशी तथा विदेशी स्मारक। देशी स्मारकों में हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, नालंदा, हस्तिनापुर प्रमुख हैं।
- जबकि विदेशी समारकों में कंबोडिया का अंकोरवाट मंदिर, इंडोनेशिया में जावा का बोरोबुदूर मंदिर तथा बाली से प्राप्त मूर्तियाँ प्रमुख हैं।
- बोर्नियों के मकरान से प्राप्त मूर्तियों में कुछ तिथियाँ अंकित हैं, यह तिथियाँ कालक्रम को स्पष्ट करने में काफी उपयोगी हैं। इन स्त्रोतों से प्राचीनकाल की वास्तुकला शैली के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।
- भारत में कई धर्मों का उद्भव व विकास होने के कारण धार्मिक मूर्तियाँ काफी प्रचलं में रही हैं। मूर्तियाँ प्राचीन काल की धार्मिक व्यवस्था, संस्कृति एवं कला के बारे में जानकारी प्राप्त करने का महत्वपूर्ण साधन है।
- प्राचीन भारत में सारनाथ, भरहुत, बोधगया और अमरावती मूर्तिकला के मुख्य केंद्र थे। विभिन्न मूर्तिकला शैलियों में गांधार कला तथा मथुरा कला प्रमुख हैं।
- मृदभांड का प्रकार समय के साथ साथ परिवर्तित होता गया, सिन्धु घाटी सभ्यता में लाल मृदभांड, उत्तरवैदिक काल में चित्रित धूसर मृदभांड जबकि मौर्य काल में काले पॉलिश किये गए मृदभांड प्रचलित थे। मृदभांड के प्रकार व रूप में नवीनता व प्रगति अलग अलग समयकाल में हुई।
- चित्रकला से प्राचीनकाल के समाज व व्यवस्थाओं के बारे में विविध जानकारी प्राप्त होती है। चित्रों के माध्यम से प्राचीन समय के लोगो के जीवन, संस्कृति तथा कला की जानकारी मिलती है। मध्य प्रदेश में स्थित भीमबेटका की गुफाओं के चित्र से प्राचीनकाल की सांस्कृतिक विविधता का आभास होता है।

(ii) साहित्यिक स्त्रोत

भारत के इतिहास में के सन्दर्भ में सर्वाधिक स्त्रोत साहित्यिक स्त्रोत हैं। प्राचीन काल में पुस्तकें हाथ से लिखी जाती थी, हाथ से लिखी गयी इन पुस्तकों को पांडुलिपि कहा जाता है। पांडुलिपियों को ताड़पत्रों तथा भोजपत्रों पर लिखा जाता था। इस प्राचीन साहित्य को 2 भागों में बांटा जा सकता है :-

a) **धार्मिक साहित्य**

भारत में प्राचीन काल में तीन मुख्य धर्मो हिन्दू, बौद्ध तथा जैन धर्म का उदय हुआ। इन धर्मों के विस्तार के साथ-साथ विभिन्न दार्शनिकों, विद्वानों तथा धर्माचार्यो द्वारा अनेक धार्मिक पुस्तकों की रचना की गयी।इन रचनाओं में प्राचीन भारत के समाज, संस्कृति, स्थापत्य, लोगों की जीवनशैली व अर्थव्यवस्था इत्यादि के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। धार्मिक साहित्य की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं:

i. **हिन्दू धर्म से सम्बंधित साहित्य**

हिन्दू धर्म विश्व का सबसे प्राचीनतम धर्मो में से एक है। प्राचीन भारत में इसका उदय होने से प्राचीन भारतीय समाज की विस्तृत जानकारी हिन्दू धर्म से सम्बंधित पुस्तकों से मिलती हैं।हिन्दू धर्म में अनेक ग्रन्थ, पुस्तकें तथा महाकाव्य इत्यादि की रचना की गयी हैं, इनमे प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार से है – वेद, वेदांग, उपनिषद, स्मृतियाँ, पुराण, रामायण एवं महाभारत। इनमे ऋग्वेद सबसे प्राचीन है। इन धार्मिक ग्रंथों से प्राचीन भारत की राजव्यवस्था, धर्म, संस्कृति तथा सामाजिक व्यवस्था की विस्तृत जानकारी मिलती है।

वेद

- हिन्दू धर्म में वेद अति महत्वपूर्ण साहित्य हैं, वेद की कुल संख्या चार है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद 4 वेद हैं।
- ऋग्वेद विश्व की सबसे प्राचीन पुस्तकों में से एक है, इसकी रचना लगभग 1500-1000 ईसा पूर्व के समयकाल में की गयी।

- जबकि यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद की रचना लगभग 1000-500 ईसा पूर्व के समयकाल में की गयी। ऋग्वेद में देवताओं की स्तुतियाँ हैं। यजुर्वेद का सम्बन्ध यज्ञ के नियमों तथा अन्य धार्मिक विधि-विधानों से है।
- सामवेद का सम्बन्ध यज्ञ के मंत्रो से है। जबकि अथर्ववेद में धर्म, औषधि तथा रोग निवारण इत्यादि के बारे में लिखा गया है।

ब्राह्मण

- ब्राह्मणों को वेदों के साथ सलंगन किया गया है, ब्राह्मण वेदों के ही भाग हैं।प्रत्येक वेद के ब्राह्मण अलग हैं।
- यह ब्राह्मण ग्रंथ गद्य शैली में हैं, इनमे विभिन्न विधि-विधानों तथा कर्मकांड का विस्तृत वर्णन है।
- ब्राह्मणों में वेदों का सार सरल शब्दों में दिया गया है, इन ब्राह्मण ग्रंथों की रचना विभिन्न ऋषियों द्वारा की गयी। ऐतरेय तथा शतपथ ब्राह्मण ग्रंथो के उदहारण हैं।

आरण्यक

आरण्यक शब्द 'अरण्य' से से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ "वन" होता है। आरण्यक वे धर्म ग्रन्थ हैं जिन्हें वन में ऋषियों द्वारा लिखा गया। आरण्यक ग्रंथों में अध्यात्म तथा दर्शन का वर्णन है, इनकी विषयवस्तु काफी गूढ़ है। आरण्यक की रचना ग्रंथो के बाद हुई और यह अलग-अलग वेदों के साथ संलग्न है, परन्तु अथर्ववेद को किसी भी आरण्यक से नहीं जोड़ा गया है।

वेदांग

जैसा की नाम से स्पष्ट है, वेदांग, वेदों के अंग हैं। वेदांगों में वेद के गूढ़ ज्ञान को सरल भाषा में लिखा गया है। शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद व ज्योतिष कुल 6 वेदांग हैं।

उपनिषद्

- उपनिषदों की विषयवस्तु दार्शनिक है, यह ग्रंथों के अंतिम भाग हैं। इसलिए इन्हें वेदांत भी कहा जाता है।
- उपनिषदों में प्रशनोत्तरी के माध्यम से अध्यात्म व दर्शन के विषय पर चर्चा की गयी है।उपनिषद श्रुति धर्मग्रन्थ हैं।उपनिषदों में ईश्वर और आत्मा के स्वभाव और सम्बन्ध का विस्तृत वर्णन किया गया है।
- यह भारतीय दर्शन (philosophy) की प्राचीनतम पुस्तकों में से एक है। उपनिषदों की कुल संख्या 108 है। वृहदारण्यक, कठ, केन ऐतरेय, ईशा, मुण्डक तथा छान्दोग्य कुछ प्रमुख उपनिषद हैं।

सूत्र साहित्य

सूत्रों का सम्बन्ध मनुष्य के व्यवहार से है, इसमें मनुष्य कर्तव्यों, वर्णाश्रम व्यवस्था तथा सामजिक नियमो का वर्णन है। श्रोत सूत्र, गृह सूत्र तथा धर्म सूत्र 3 सूत्र हैं।

स्मृतियाँ

- स्मृतियों में मनुष्य के जीवन के सम्पूर्ण कार्यों की विवेचना की गयी है, इन्हें धर्मशास्त्र भी कहा जाता है। ये वेदों की अपेक्षा कम जटिल हैं। इनमे कहानीयों व उपदेशों का संकलन है। इनकी रचना सूत्रों के बाद हुई।
- मनुसमृति व याज्ञवल्क्य स्मृति सबसे प्राचीन स्मृतियाँ हैं। मनुस्मृति पर मेघतिथि, गोविन्दराज व कुल्लूकभट्ट ने टिपण्णी की है। जबकि याज्ञवल्क्य स्मृति पर विश्वरूप, विज्ञानेश्वर तथा अपरार्क ने टिपण्णी की है।
- ब्रिटिश शासनकाल में बंगाल के गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने मनुस्मृति का अंग्रेजी में अनुवाद करवाया, अंग्रेजी में इसका नाम "द जेंटू कोड" रखा गया। आरम्भ में स्मृतियाँ केवल मौखिक रूप से अग्रेषित की जाती थीं, स्मृति शब्द का अर्थ "स्मरण करने की शक्ति" होता है।

रामायण

रामायण की रचना महर्षि वाल्मीकि ने की। रचना के समय रामायण में 6,000 श्लोक थे, परन्तु समय के साथ साथ इसमें बढ़ोत्तरी होती गयी। श्लोकों की संख्या पहले बढ़कर 12,000 हुई तथा उसके पश्चात् यह संख्या 24,000 तक पहुँच गयी।24,000 श्लोक होने के कारण रामायण को चतुर्विंशति सहस्त्री संहिता भी कहा जाता है। रामायण को कुल 7 खंडो में विभाजित किया गया है – बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड।

महाभारत

- महाभारत विश्व के सबसे बड़े महाकाव्यों में से एक है, इसकी रचना महर्षि वेद व्यास ने की। यह एक काव्य ग्रन्थ है। इसे पंचम वेद भी कहा जाता है। यह प्रसिद्ध यूनानी ग्रंथों इलियड और ओडिसी की तुलना में काफी बड़ा है।
- रचना के समय इसमें 8,800 श्लोक थे, जिस कारण इसे जयसंहिता कहा जाता था। कालांतर में श्लोकों की संख्या बढ़कर 24,000 हो गयी, जिस कारण इसे भारत कहा गया। गुप्तकाल में श्लोकों की संख्या 1 लाख होने पर इसे महाभारत कहा गया।
- महाभारत को 18 भागों में बांटा गया है – आदि, सभा, वन, विराट, उद्योग, भीष्म, द्रोण, कर्ण, शल्य, सौप्तिक, स्त्री, शांति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्रमवासी, मौसल, महाप्रस्थानिक तथा स्वर्गारोहण। महाभारत में न्याय, शिक्षा, चिकित्सा, ज्योतिष, नीति, योग, शिल्प व खगोलविद्या इत्यादि का विस्तार से वर्णन किया गया है।

पुराण

- पुराणों में सृष्टि, प्राचीन ऋषि मुनियों व राजाओं का वर्णन है।पुराणों की कुल संख्या 18 है, प्राचीन आख्यानों का वर्णन होने से इन्हें पुराण कहा जाता है। इनकी रचना संभवतः ईसा से पांचवी शताब्दी पूर्व की गयी थी। विष्णु पुराण, मतस्य पुरान, वायु पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण तथा भागवत पुराण काफी महत्वपूर्ण पुराण हैं, इन पुराणों में विभिन्न राजाओं की वंशावलियों का वर्णन है। इसलिए यह पुराण ऐतिहासिक दृष्टि से अति महत्वपूर्ण हैं।

अध्याय – 3

वैदिक सभ्यता

- **वैदिक काल**
  वैदिक काल को दो भागों में बांटा गया है -
  ऋग्वैदिक काल उत्तरवैदिक काल
  [1500–1000ई.पू] [1000 - 600 ई.पू]
- वेदों की संख्या चार है
- ऋग्वेद
- यजुर्वेद
- सामवेद
- अथर्ववेद
- त्रयी नाम तीनों वेदों के लिए प्रयोग किया जाता है।
- आरम्भिक वैदिक साहित्य में सर्वाधिक बार वर्णित नदी सिंधु है ।

ऋग्वेद-

- आर्य जाति की प्राचीनतम रचना
- रचना पंजाब में
- इसमें 10 भाग (मण्डल) है। 1028 सूक्त, 10580 श्लोक हैं ।
- ऋग्वेद मन्त्रों का एक संकलन है जिन्हे यज्ञों के अवसर पर देवताओं की स्तुति के लिए गाया जाता है ।
- होर्त- ऋग्वेद के मंत्र पढ़ने वाला
- ऋचा-ऋग्वेद के मंत्र
- ऋग्वेद का पहला और दसवाँ मण्डल सबसे नवीनतम है (बाद में जोड़े गये)
- तीसरे मण्डल में देवी सूक्त' मिलता है।
- इसमें गायत्री मंत्र का उल्लेख है जो सावित्री को समर्पित है।
- आर्य शब्द श्रेष्ठ वंश को इंगित करता है ।
- तीसरे मण्डल की रचना विश्वामित्र ने की।
- सातवें मण्डल में दशराज्ञ युद्ध का विवरण मिलता है । यह युद्ध परुषणी यह (रावी) नदी के तट पर सुदास एवं दस जनों के बीच लड़ा गया था । जिसमें सुदास विजय हुआ ।
- ऋग्वेद में नौवाँ मण्डल पूर्णरूप से सोम देवता को समर्पित है ।
- पुरुष मेध प्रथा का उल्लेख शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में मिलता है।

दशराज्ञयुद

- रावी नदी (परुषणी नदी)के तट पर लड़ा गया।
  त्रित्सु वंश vs दस जन
- भरत वंश (त्रित्सु वंश) के सुदास ने विश्वामित्र को पुरोहित पद से हटाकर वशिष्ठ को नियुक्त कर दिया।
- विश्वामित्र ने दस राजाओं का संघ बना लिया (प्रतिशोध) युद्ध किया ।
- ऋग्वेद में 1028 सूक्त है।
  1017+ 11 (परिशिष्ट) 1028 सूक्त

सामवेद

- साम का मतलब संगीत या गान होता है ।
- यज्ञों के अवसर पर गाये जाने वाले मन्त्रों का संग्रह
- संगीत का प्राचीनतम स्त्रोत: भारतीय संगीत का जनक सामवेद को मान जाता है ।
- मंत्र सूर्य देवता को समर्पित
- **उद्गाता** - मन्त्रों को गाने वाले व्यक्ति को कहा जाता है ।

यजुर्वेद

- यज्ञों के नियम एवं विधि विधानों का संकलन
- यह एक ऐसा वेद ह जो [गद्य और पद्य दोनों में] है।
- अन्य तीनों वेद पद्य में है।
- इसे गति या कर्म का वेद भी कहा जाता है।
- अध्वर्य- मंत्र पढ़ने वाले को अध्वर्य कहते हैं।
- शून्य का उल्लेख मिलता है।
- इसमें बलिदान विधि का वर्णन है ।

अथर्ववेद

- इसे ब्रह्म वेद या श्रेष्ठ वेद भी कहा जाता है।
- अथर्वा ऋषि द्वारा रचित ज्ञान ही अथर्ववेद है। इस वेद में कुल 731 मंत्र तथा लगभग 6000 पद्य है ।
- अथर्ववेद कन्याओं के जन्म की निंदा करता है ।
- इसमें जादू, टोने-टोटके, अंधविश्वास व चिकित्सा का उल्लेख मिलता है।
- इसमें सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है ।

ब्राह्मण साहित्य

- ब्राह्मण ग्रन्थों की रचना संहिताओं की व्याख्या करने के लिए गद्य में लिखे गये हैं ।
- ये मुख्यत: दार्शनिक ग्रन्थ हैं ।
  ऋग्वेद - ऐतरेय ब्राह्मण
  कोषीतकी
  यजुर्वेद - शतपथ ब्राह्मण
  तेतरेय ब्राह्मण
  सामवेद - पंचवीश ब्राह्मण
  षडवीश ब्राह्मण
  जैमिनीय ब्राह्मण
  अथर्ववेद - गोपथ ब्राह्मण

आरण्यक साहित्य

- रहस्यात्मक एवं दार्शनिक रूप में वनों (जंगलों) में लिखे गये।

उपनिषद्

- भारतीय दार्शनिक विचारों का प्राचीनतम संग्रह है।
- भारतीय दर्शन का स्त्रोत अथवा पिता
- उपनिषदों की कुल संख्या 108
- सत्यमेव जयते मुण्डकोपनिषद से लिया गया है।
- मोक्ष प्राप्ति के साधन की चर्चा वैदिक साहित्य में उपनिषद् से की गई है ।
- असतो मा सदगमय वाक्यांश बृहदारण्यकोपनिशद से लिया गया है ।

वेदांग

वेदों को भली-भांति समझने के लिए छः वेदांगो की रचना की गई ।

1. शिक्षा
2. ज्योतिष
3. कल्प वेदों के शुद्ध उच्चारण में सहायक
4. व्याकरण
5. निरुक्त
6. छन्द

पुराण

- ऋषि लोमहर्ष एवं इनके पुत्र उग्रक्षवा ने संकलित किया ।
- इनकी संख्या 18 है।
- मत्स्य पुराण- सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक
- विष्णु पुराण – मौर्य वंश का उल्लेख
- वायु पुराण - गुप्त वंश का उल्लेख

सूत्र साहित्य

वैदिक साहित्य को अक्षुण्य बनाये रखने के लिए सुत्र साहित्य का प्रणयन ।

स्मृति

- ये न्याय ग्रन्थ तथा समाज के संचालन से सम्बन्धित हैं।

मनुस्मृति

- शुंगकाल के दौरान लिखित
- प्राचीनतम स्मृति

वैदिक काल

ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.)	उत्तरवैदिक काल (1000-600 ई.पू.)

ऋग्वैदिक काल

ऋग्वैदिक या पूर्व वैदिक सभ्यता का विस्तार 1500 ई.पू. से 1000 ई. पू. तक माना जाता है।

आर्यो का भौगोलिक विस्तार

- आर्य सबसे पहले सप्त सैंधव प्रदेश में आकर बसे।
- o इस प्रदेश में बहने वाली सात नदियों का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।

1. सिन्धु
2. सरस्वती
3. शतुद्रि सतलज
4. विपाशा (व्यास)
5. परुष्णी (रावी)
6. वितस्ता (झेलम)
7. अस्क्निी (चिनाब)

- ऋग्वेद में कुछ अफगानिस्तान की नदियों का भी उल्लेख मिलता है।
- ऋग्वेद में सबसे ज्यादा सिन्धु नदी का उल्लेख मिलता है।
- सरस्वती सबसे पवित्र नदी थी। देवीतमा, मातेतमा, नदीतमा
- मुजवन्त' नामक पहाड़ी चोटी का उल्लेख जो कि हिमालय हैं।
- वैदिक काल में लम्बे समय तक अविवाहित रहने वाली कन्याओं को अमाजू खा जाता है ।
- आर्यों ने अगले पड़ाव के रूप में कुरुक्षेत्र के निकट के प्रदेशों पर कब्जा कर उस क्षेत्र का नाम ब्रह्मवर्त (आर्यावृत्त) रखा। आर्य निम्नलिखित कारणों से विजय होते थे
  - घोड़े चालित रम
  - कांसे के उपकरण
  - कवच
- दास और दस्यु आर्यों के शत्रु थे।
- वैदिक नदी अस्क्निी की पहचान चिनाब नदी के रूप में की गई है ।

राजनीतिक जीवन

- आर्यों का जीवन यायावर जीवन था।
- आर्य कई जनों में विभक्त थे । इनमें पांच जनों के नाम मिलते हैं - अनु, दुह, यदु, पुरु, तुर्वस (पंचजन)
- आर्यों के कुल जन 24 थे ।
- राजनीतिक संगठन की सबसे छोटी इकाई कुल अथवा परिवार होता था।
- परिवार का स्वामी पिता अथवा बड़ा भाई होता था जिसे कुलप कहा जाता था।
- कई कुलो से मिलकर ग्राम बनता था।
- ग्राम का मुखिया ग्रामीणी
- ग्रामणी संभवतः नागरिक तथा सैनिक दोनों ही प्रकार के कार्य करता था।
- ग्राम से बड़ी संस्था विश होती थी।
- विश का स्वामी विशपति
- अनेक विशों का समूह जन होता था।
- जन का मुखिया राजा गोपागोपस्या जनपति कहलाता था।
- कुलग्राम विशजन कुलप ग्रामणी विशपति गोपस्य
- ऋग्वेद काल में राजतन्त्र का प्रचलन था ।
- राजा को जन का रक्षक -गोप्ता जनस्य दुर्गों का भेदन करने वाला-पुरानेता कहा गया है।
- दसवें मण्डल में गणतन्त्रतात्मक समिति का उल्लेख हैं ।
- बलि शब्द का प्रयोग कई बार हुआ है।
- एक व्यक्ति के जान की कीमत 10 गायें थी जिसे शतदाय कहा जाता था।
- महिलाओं को राजनीतिक एवं सम्पति संबधाधिकार प्राप्त नहीं था।
- पण, धन, राई- युद्ध में जीते हुए धन के नाम थे ।
- छोटे राजाओं को राजक, उससे बड़े को राजन तथा सबसे बड़े को सम्राट कहा जाता है।

प्रशासनिक संस्थाएँ

- सभा, समिति, विदथ, गण
- सभा और समिति को अथर्ववेद में प्रजापति की दो पुत्रियां कहा गया है।

- सभा एवं समिति राजा की निरकुंशता पर नियन्त्रण रखती थी।
- सभा वृद्ध अथवा कुलीन मनुष्यों की संस्था थी ।
- सभा का अध्यक्ष- सभ्य
- सभा के सदस्य - सुजान
- समिति सर्वसाधारण लोगों की संस्था होती थी
- समिति का अध्यक्ष- ईशान
- समिति का सबसे महत्वपूर्ण कार्य राजा का चुनाव करना होता था।
- ऋग्वेद में सभा का उल्लेख 8 बार तथा समिति का 9 बार उल्लेख हुआ है।
- पुरोहित युद्द के समय राजा के साथ जाता था तथा उसकी विजय के लिए देवताओं से प्रार्थना करता था।
- सेनानी राजा के आदेशानुसार युद्ध में कार्य करता था।

सामाजिक जीवन

- पितृसतात्मक परिवार (संयुक्त) समाज का आधार होता था।
- समाज तीन वर्णों में विभक्त- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वेश्य
- वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित, व्यक्ति वर्ण बदल सकता था।
- ऋग्वेद के 9 वें मण्डल में कहा गया है कि मैं कवि हूँ, मेरे पिता वैध है तथा मेरी मां अन्न पीसने वाली है।
- महिलाओं को विदाई के समय जो धन उपहार दिया जाता था । उसे वहतु कहा जाता था।
- महिलाओं ने ऋग्वेद के कुछ मंत्रो की रचना भी की।
- विदुषी महिलाएँ-
  शची, पौलोमी, कांक्षावृत्ति, घोंशा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, विशपला, मुद्गलानी
- लोपामुद्रा अगस्त ऋषि की पत्नी थी।
- आर्य मांसाहारी तथा साकाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे।
- गाय विनिमय का माध्यम अध्या शब्द का प्रयोग (गाय के लिए) हुआ है ।

आर्थिक जीवन

- संस्कृति ग्रामीण
- घोड़ा प्रिय पशु था ।
  दधिका- एक देवी अश्व
- कृषि योग्य भूमि उर्वरा अथवा क्षेत्र कहलाती थी।
- सीता या कुण्ड हल से जुती भूमि को कहा जाट था।
- करीब, गोबर की खाद
- व्यापार-वाणिज्य प्रधानतः पणि वर्ग के लोग करते थे।
- पणि का अर्थ व्यापारी
- निष्क- विनिमय का माध्यम
- निष्क पहले आभूषण था तथा बाद में सिक्के के रूप में प्रयोग किया जाने लगा।
- कुलाल - मिट्टी के बर्तन बनाने वाला होता था।

धर्म और धार्मिक विश्वासन्

- आर्यो का सबसे प्राचीन देवता घौंस था ।
- घौंस आर्यों के पिता
- ऋग्वैदिक काल में सबसे महत्त्वपूर्ण देवता इन्द्र था।
- ऋग्वेद में $\frac{1}{4}$ या 250 सूक्त इन्द्र को समर्पित
- इन्द्र युद्ध का देवता था।

उत्तर वैदिक काल

- इस काल का समय 1000 ई.पू. से 600 ई.पू. तक माना जाता है।
- इस काल का इतिहास ऋग्वेद के आधार पर विकसित साहित्यों से पता चलता है।
  ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद
- अथर्ववेद में परीक्षित को मृत्युलोक का देवता कहा गया है।
- राज्य के उच्च अधिकारी रत्नी होते थे ।
- विभाग के अध्यक्ष
  सेनानी - सेनापति ।
  सूत - रथसेना का नायक
  ग्रामणी- गाँव का मुखिया संग्रहीता – कोषाध्यक्ष
  भागधुक – अर्थमंत्री
- शतपति संभवत 100 ग्रामों के समूह का अधिकारी होता था।
- श्रष्टिन- प्रधान व्यापारी
- माप की इकाईयां
  निस्क, शतमान, पाद, कृष्णल
  बाट की मूल इकाई
- समाज चार वर्गों में विभक्त था ।
  ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

उत्तर वैदिक काल :-

- इस काल में तीनों वेदों सामवेद, यजुर्वेद, अथर्वेद के अतिरिक्त ब्राह्मण, अरण्यक, उपनिषद और वेदांगो की रचना हुई। ये सभी ग्रंथ उतर वैदिक काल के साहित्यिक स्त्रोत माने जाते है।
- लोहे के प्रयोग ने सामाजिक-आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन में क्रांति पैदा फर दी।
- यज्ञ-विधान क्रिया उत्तर वैदिक काल की देन है।
- राजसूय यज्ञ का प्रचलन उत्तर वैदिक काल में हुआ। यह राज्याभिषेक से संबंधित था । इस यज्ञ के दौरान राजा रानियों के घर जाता था।
- अश्वमेध यज्ञ शक्ति का द्योतक था।
- उत्तर वैदिक काल में प्रजापति महत्त्वपूर्ण देवता हो गए।
- उत्तर वैदिक काल में वर्ण व्यवस्था जन्म पर आधारित हो गई।
- पुनर्जन्म की अवधारणा पहली बार व्रहदारणयक उपनिषद में आई है।
- उत्तर वैदिक ग्रंथ छान्दोग्य उपनिषद से तीन आश्रमों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ तथा वानप्रस्थ) का उल्लेख मिलता है।

• जैन धर्म

- जैन शब्द का निर्माण जिन से हुआ है जिसका अर्थ होता हैं – विजेता
- संस्थापक – ऋषभदेव प्रथम तीर्थकर
- कुल 24 तीर्थकर हुए
- 23वें- तीर्थकर पार्श्वनाथ थे जो काशी के इक्ष्वाकु वंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे।
- जैन धर्म को व्यवस्थित रूप दिया।
- 24वें-तीर्थकर वर्धमान महावीर थे।
- जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी।
- जन्म कुण्डग्राम (वैशाली)में हुआ था।
- महावीर के बचपन का नाम वर्धमान था।
- पिता – सिद्धार्थ ज्ञात्रक कुल के सरदार थे।
- माता – त्रिशला लिच्छवि राजा चेटक की बहन थी।
- अणुव्रत सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित है।
- जैन धर्म में संवर का क्या अभिप्राय जीव की ओर नये कर्म का प्रवाह रुक जाना है।
- महावीर की पत्नी का नाम यशोदा एवं पुत्री का नाम अनोज्जा प्रियदर्शनी था।
- गृहत्याग 30 वर्ष की आयु में
- 12 वर्षो की कठिन तपस्या के बाद महावीर को व्राम्भिक के समीप ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के निचे तपस्या करते हुए सम्पूर्ण ज्ञान का बोध हुआ।
- ज्ञान प्राप्ति 42 वर्ष की आयु में
- उपदेश - अर्द्ध-मागधी भाषा में दिया।
- प्रथम उपदेश राजगृह में दिया था।
- प्रथम शिष्य - जमालि थे।
- शिष्या - चन्दना थी।
- मृत्यु पावापुरी बिहार में।
- महावीर जी शिक्षा प्राकृत भाषा में देते थे।

जैन धर्म के पंच महाव्रत

1. सत्य वचन
2. अस्तेय (चोरी मत करो)
3. अंहिसा
4. अपरिग्रह (धन संचय मत करो)
5. ब्रह्मचर्य

त्रिरत्न (मोक्ष प्राप्ति के साधन)

- सम्यक ज्ञान
- सम्य दर्शन
- सम्यक चरित्र
- जैनधर्म में पुनर्जन्म में विश्वास तथा कर्मवाद में विश्वास पर बल

संघ

- महावीर ने एक संघ की स्थापना की।
- इस संघ के 11 अनुयायी बने जो गणधर कहलाये।
- 11 में से 10 महावीर की मृत्यु होने से पहले मोक्ष प्राप्त कर चुके थे।
  एक ही जीवित था - सुधर्मण

जैन संगीतियां (सभायें)

प्रथम- 300 ई.पू.

- पाटलिपुत्र में
- चन्द्रगुप्त मौर्य (संरक्षक)
- अध्यक्ष - स्थूलभद्र
- जैन धर्म दो भागों में विभाजित
- श्वेताम्बर - सफेद कपड़े वाले
- दिगम्बर - नग्न रहने वाले
  द्वितीय - 512 ई.पू. /513/526 ई.पू.
- वल्लभी (गुजरात) में
- क्षमाश्रवण (अध्यक्ष)
- जैन ग्रन्थों का अन्तिम रूप से संकलन
- जैन धर्म का सबसे बड़ा केन्द्र चम्पानगरी
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने कर्नाटक में जैन धर्म का विस्तार किया।
- चन्दना प्रथम जैन महिला भिक्षुणी थी।
- हाथी गुम्फा अभिलेख (खारवेल) प्रारम्भिक जैन अवशेष
- महावीर के अनुयायियों को मूलतः निग्रंथ कहा जाता था।
- दो जैन तीर्थकरों ऋषभदेव एवं अरिष्टनेमी के नामों का उल्लेख ऋगवेद में मिलता है। अरिष्टनेमी को भगवान कृष्ण का निकट संबंधी माना जाता है।
- जैन धर्म दो भागों में बटा हुआ है।
- श्वेताम्बर एवं दिगम्बर
- श्वेताम्बर (श्वेत वस्त्र धारण करने वाले स्थूलभद्र के शिष्य कहलाये)
- दिगम्बर (नग्न रहने वाले भद्रबाहु के शिष्य कहलाये)
- जैनधर्म में ईश्वर की मान्यता नहीं है। जैन धर्म में आत्मा की मान्यता है।
- जैनधर्म ने अपने आध्यात्मिक विचारों को सांख्य दर्शन से ग्रहण किया।
- स्यादवाद सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित है।
- मैसूर के गंग वंश के मंत्री, चामुंड के प्रोत्साहन से कर्नाटक के श्रवणबेलगोला में 10 वी. शताब्दी के मध्य भाग में विशाल बाहुबली की मूर्ति गोमतेश्वर की मूर्ति का निर्माण किया गया गोमतेश्वर की प्रतिमा कायोत्सर्ग मुद्रा में है। यह मूर्ति 18 मी. ऊँची है एवं एक ही चट्टान को कटकर बनाई गई है।
- खजुराहों में जैन मंदिरों का निर्माण चंदेल शासकों द्वारा किया गया।
- मोर्योत्तर युग में मथुरा जैन धर्म का प्रसिद्ध केन्द्र था। मथुरा कला का संबंध जैनधर्म से था।
- जैनधर्म तीर्थकरों की जीवनी भद्रबाहु द्वारा रचित कल्पसूत्र में है।
- 72 वर्ष की आयु में महावीर की मृत्यु (निर्वाण) 468 ईसा पूर्व में बिहार राज्य के पावापुरी (राजगीर)में हुई थी।

- भारत का बिस्मार्क सरदार वल्लभ भाई पटेल को कहा जाता है ।
- शुद्धि आंदोलन के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती थे ।
- मुहम्मद अली एवं शोकत अली ने 1919 में खिलाफत आंदोलन की शुरुआत की ।
- आर्य महिला सभा की स्थापना पंडिता रमाबाई ने की थी ।
- कांग्रेस के प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष बदरुद्दीन तैयबजी थे ।
- सुभाष चन्द्र बोस को सर्वप्रथम नेताजी एडोल्फ हिटलर ने कहा था ।
- महात्मा गाँधी को सर्वप्रथम राष्ट्रपिता कहकर संबोधित सुभाषचन्द्र बोस ने किया ।
- द स्कोप ऑफ हैप्पीनेस विजयलक्ष्मी पंडित थी । इंडिया टुडे पुस्तक की लेखक रजनी पाम दत्त थी ।

अध्याय – 7

क्रांतिकारी आंदोलन से आजादी तक

- सावरकर बंधुओं ने 1904 में मित्र मेला एवं 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना की।
- महाराष्ट्र में पहली क्रांतिकारी घटना 1897 में प्लेग कमिश्नर रैण्ड की गोली मारकर की गयी हत्या थी।
- वस्तुतः चापेकर बंधुओं ने बालकृष्ण एवं दामोदर चापेकर तिलक के पत्र'केसरी' में छपे लेख से प्रेरित होकर यह कार्य किया था।
- बंगाल में 1902 में अनुशीलन समिति की स्थापना हुई जिसमें 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'जतिन नॉथ' की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- बंगाल में 'बारीन्द्र कुमार घोष' एवं 'उपेन्द्रनाथ दत्त' ने 'युगांतर' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया।
- 1930 में बंगाल में विनय, बादल एवं दिनेश नामक क्रांतिकारियों ने अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी। इसी तरह सूर्यसेन)मास्टर दा (ने चटगांव शस्त्रागार पर नियंत्रण स्थापित किया ।
- भगत सिंह ने 1925 में 'भारत नौजवान सभा' की स्थापना की जिसने भारतीयों को समाजवादी विचारधारा के माध्यम से क्रान्ति की ओर प्रेरित किया।
- पंजाब में क्रांतिकारी विचारधारा के प्रसार में अजीत सिंह की भूमिका महत्वपूर्ण थी। जब अजीत सिंह को पंजाब से निर्वासित किया गया तो वह फ्रांस पहुंचकर क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करने लगे।
- दिल्ली में 1912 में वायसराय लार्ड हार्डिंग के काफिले पर बम फेंका गया। इस घटना में रास बिहारी बोस की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- संयुक्त प्रांत में 9 अगस्त 1925 में लखनऊ के पास काकोरी ट्रेन डकैती की गयी और सरकारी खजाने को लूटा गया। इस काकोरी षड्यंत्र मुकदमें के तहत राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिडी एवं अशफाक उल्ला खां को फांसी दे दी गयी। चन्द्रशेखर आजाद भी इस घटना में, शामिल थे किंतु वे फरार होने में सफल रहे ।
- 1928 में दिल्ली में फिरोजशाह कोटला मैदान में क्रांतिकारियों की बैठक हुई जिसमें भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद जैसे क्रांतिकारी शामिल थे। इस बैठक में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन)HRA) का नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन CHSRAJ कर दिया गया।
- रास बिहारी घोष –उदारवादी
- रास बिहारी बोस- क्रांतिकारी
- स्वदेशी आंदोलन में किसानों की भागीदारी नहीं थी।
- ब्रह्म समाज -1828
- आर्य समाज 1875
- रामकृष्ण मिशन -1897

विदेश में प्रसार

- **लंदन** में 1905 में श्याम जी कृष्ण वर्मा ने 'इंडिया होमरुल सोसाइटी'की स्थापना की जिसका लक्ष्य भारत के लिए स्वराज की प्राप्ति करना था। इसकी स्थापना ब्रिटिश समाजवादी नेता 'हीडमैंन' के सुझाव पर की गई। है। इसके उपाध्यक्ष अब्दुल्ला सुहरावर्दी थे।
- श्याम जी कृष्ण वर्मा ने लंदन में 'इंडिया हाउस' की स्थापना की जो क्रांतिकारियों का प्रमुख केन्द्र बना। यह विदेशों में रह रहे भारतीयों को एकजुट कर क्रांतिकारी विचारधारा के प्रसार में अपनी भूमिका निभाता था। सरकारी दमन के कारण श्याम जी कृष्ण वर्मा को लंदन छोड़ना पड़ा और वे पेरिस चले गए। तत्पश्चात् इंडिया हाउस का कार्यभार वी.डी . सावरकर ने संभाला।
- वी.डी .सावरकर ने 1857 का 'स्वतंत्रता संग्राम' नामक पुस्तक की रचना की और मेजिनी की आत्मकथा का मराठी में अनुवाद किया।
- इसी इंडिया हाउस से जुड़े हुए मदन लाल ढींगरा भारत सचिव के राजनीतिक सलाहकार 'वाइली' की 1909 में गोली मारकर हत्या कर दी।
- **फ्रांस** में श्रीमती भीखा जी कामा ने पेरिस में क्रांतिकारी विचारों का प्रसार किया। इन्होंनें वंदे मातरम नामक पत्र का संपादन किया। इन्हें क्रांतिकारियों की माता कहा जाता है।
- **अमेरिका**-:1913 अमेरिका के पोर्ट लैंड में 'हिंद एसोशिएन' की स्थापना नामक पत्रिका का प्रकाशन गुजराती और उर्दू में किया थी।
- गदर पार्टी की स्थापना अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में हुई। जिसमें सोहन सिंह भावना, लाला हरदयाल भाई परमानंद की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- गदर पार्टी के अध्यक्ष भावना एवं महासचिव लाला हरदयाल थे तथा कोषाध्यक्ष काशीराम थे।
- गदर पार्टी धर्मनिरपेक्ष स्वरूप से युक्त थी।
- गदर पार्टी के सदस्य करतार सिंह सराभा के वीरता एवं बलिदान से भगत सिंह अत्यधिक प्रभावित थे।
- गदर आंदोलन ने कामागाटामारू जहाज विवाद में भारतीयों का समर्थन किया।
- कामागा टामारु जहाज विवाद 1914 में हुआ था ।
- **अफगानिस्तान**-:1915 में राजा महेन्द्र प्रताप एवं बरकतुल्ला तथाओबैदुल्ला सिंधी के प्रयासों से काबुल में भारत की पहली स्वतंत्र एवं अस्थायी सरकार की स्थापना की गयी जिसमें महेन्द्र प्रताप राष्ट्रपति और बरकतुल्ला प्रधानमंत्री बने ।

होमरूल लीग आंदोलन (1916)

- एनी बेसेन्ट और तिलक ने 1916 में होमरुल लीग की स्थापना की। इसका गठन आयरलैंड के होमरूल लीग के आधार पर किया गया ।
- जून-1914 में तिलक जेल से रिहा हुए।
- तिलक ने अप्रैल 1916 में बेलगाँव में होमरूल लीग की स्थापना की जिसकी शाखाएँ महाराष्ट्र)बॉम्बे को छोड़कर(, कर्नाटक, मध्यप्रांत एवं बरार में स्थापित थी।
- ऐनी बेसेंट ने सितम्बर -1916 में मद्रास में होमरूल लीग की स्थापना की जिसकी शाखाएँ तिलक द्वारा स्थापित किए गए क्षेत्रों को छोड़कर पूरे भारत में भी जिनकी संख्या 200 थी और इसके सचिव 'जार्ज अरुण्डेल' थे।
- होमरूल लीग आंदोलन का मुख्य उद्देश्य भारतीय जनमानस को स्वशासन के वास्तविक स्वरूप से परिचित कराना था।
- तिलक और बेसेंट के प्रयासों से 1916 में लखनऊ अधिवेशन में कांग्रेस के नरमदल एवं गरमदल के बीच समझौता हुआ।

1945 - 1947 के बीच का भारत:

- वैवेल योजना - जून 1945
- आजाद हिंद फौज एवं लाल किला मुकदमा –नवम्बर 1945
- शाही भारतीय नौसेना विद्रोह –फरवरी 1946
- कैबिनेट मिशन – मार्च 1946
- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली की घोषणा –20 फरवरी 1947
- माउंटबेटन योजना –3 जून 1947

- **वैवेल योजना (1945) –** वायसराय वैवेल ने 1945 में एक राजनीतिक सुधार की योजना प्रस्तुत की जिसे वेवेल योजना के नाम से जाना जाता है।
- इस योजना के अनुसार वायसराय के कार्यकारिणी का पुर्नगठन किया जाना था। इस उद्देश्य से राजनीतिक नेताओं को जेल से रिहा किया गया और जून 1995 में शिमला में एक सम्मेलन बुलाया गया।
- वैवेल योजना के अंतर्गत निम्नलिखित प्रावधान रखे गए :
  - o वायसराय एवं कमांडर-इन चीफ को छोड़कर वायसराय की कार्यकारिणी के सभी सदस्य भारतीय होंगे और परिषद में हिंदू मुसलमानों की संख्या बराबर रखी जाएगी।
  - o वायसराय वीटो पावर के प्रयोग का प्रयास नहीं करेगा।
- इस योजना के संदर्भ में मुस्लिम लीग चाहती थी कि उसे ही भारत मुसलमानों का एक मात्र दल माना जाए वायसराय की कार्यकारिणी में मुस्लिम लीग के बाहर का कोई मुसलमान नहीं होना चाहिए।
- दूसरी तरफ कांग्रेस ने इस सूची के लिए दो मुस्लिम सदस्यों -मौलाना आजाद एवं अब्दुलगफ्फार खाँ को नियुक्त किया जिसका जिन्ना ने विरोध किया। अतः वायसराय वैवेल ने जिन्ना की आपत्ति देखते हुए सम्मेलन को असफल घोषित कर समाप्त कर दिया।
- कांग्रेस ने जिन्ना के मन को इसलिए स्वीकार नहीं किया क्योंकि ऐसा करने से कांग्रेस एक साम्प्रदायिक दल अर्थात् हिंदू दल के रूप में जाना जाता और भारत के मुसलमानों का एकमात्र दल मुस्लिम लीग को माना जाता । इससे मुस्लिम लीग की भारत विभाजन की माँग और मजबूत हो जाती ।
- **आजाद हिन्द फौज (भारतीय राष्ट्रीय सेना-INA) :-** INA की स्थापना 1942 में मोहन सिंह ने की थी।

- जापानी मेजर फूजीवारा ने मोहन सिंह को इसके गठन का सुझाव दिया था ।
- मोहन सिंह ब्रिटिश सेना में एक भारतीय सैन्यअधिकारी थे
- 1 सितम्बर 1942 को मोहन सिंह के अधीन मलाया में INA का गठन हुआ।
- INA का दूसरा चरण उस समय आया जब सुभाष चन्द्र बोस 2 जुलाई 1943 में सिंगापुर पंहुचे और वहां से उन्होनें "दिल्ली चलो" का नारा दिया ।
- क्रांतिकारी नेता रास बिहारी बोस ने सुभाष चन्द्र बोस को सहयोग दिया।
- अतः सुभाष चन्द्रबोस ने 21 अक्तूबर 1943 आजाद हिंद फौज के नाम से एक अस्थायी सरकार का गठन किया।
- आजाद हिंद फौज का मुख्यालय सिंगापुर के साथ-साथ रंगून,म्यांमार,में भी बनाया गया ।
- बोस की सरकार ने Uk और USA के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और गांधी, नेहरू एवं सुभाष नामक सैन्य टुकड़ी का गठन किया
- सुभाष चन्द्र बोस ने महिलाओं के लिए रानी झाँसी रेजिमेंट का गठन किया ।

<u>लाल किला मुकदमा (नवम्बर 1945):</u>

- आजाद हिंद फौज के बंदी सैनिकों पर ब्रिटिश सरकार द्वारा लाल किले में मुकदमा चलाया गया।
- फ़ौज के शाहनवाज खान, गुरुबख्श सिंह ढिल्लो एवं प्रेम कुमार सहगल को एक ही कठघरे में खड़ा किया गया।
- इसी क्रम में कांग्रेस ने सैनिकों के बचाव हेतु एकआजाद हिंद फौज समिति का गठन किया।
- लाल किले मुकदमे में बचाव पक्ष का नेतृत्व 'भूलाभाई देसाई' कर रहे थे।
- नेहरू ने इस मुकदमे के दौरान 25 वर्ष पश्चात् काली कोट पहनी।
- लाल किले मुकदमे के संदर्भ में कैदियों को सभी राजनीतिक दलो जैसे -कांग्रेस, मुस्लिम लीग, कम्युनिस्ट पार्टी आदि का समर्थन प्राप्त था।
- आजाद हिंद सप्ताह (11 नवम्बर) को आयोजन किया गया तथा 12 नवम्बर 1945 को आजाद हिंद दिवस मनाया गया।
- आजाद हिंद फौज के कैरन अब्दुल रशीद को 7 वर्ष की सजा दिए जाने के विरोध में प्रदर्शन हुआ जिसका नेतृत्व मुस्लिम लीग के छात्रों ने किया। इसमें कांग्रेस एवं कम्युनिस्ट पार्टी के छात्र संगठन भी शामिल हुए।
- शाही भारतीय नौसेना विद्रोह 18 फरवरी 1946 को हुआ था।
- हड़ताली नाविकों ने केंद्रीय नौसेना हड़ताल समिति का गठन किया जिसके प्रमुख एम.एस.खान थे।
- विद्रोह का प्रसार बाम्बे, कोलाबा)महाराष्ट्र(, कराँची, कलकत्ता, जबलपुर दिल्ली, अम्बाला, जालंधर आदि स्थानों पर फैला ।

- **<u>कैबिनेट मिशन (मार्च 1946)</u>**
- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति कमजोर होने लगी थी। अत :उपनिवेशों पर पकड़ बनाए रखना सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण हुआ ब्रिटेन में संसदीय चुनाव हुए और वहां लेबर 1945 मे पार्टी को बहुमत मिला और ऐटली प्रधानमंत्री बने।
- इसी क्रम में, ब्रिटिश सरकार ने 1946 में तीन सदस्यीय कैबिनेट मिशन भारत भेजने की घोषणा की। इसमें शामिल थे ।
- **पेंथिक लॉरेन्स**-भारत सचिव
- **स्टेफार्ड क्रिप्स** –व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष
- **ए .वी .एलेक्ज़ेंडर**- ब्रिटिश नौसेना प्रमुख
- मार्च 1946 में कैबिनेट मिशन भारत पहुंचा और मई 1946 में उसने अपनी योजना प्रस्तुत की।
- प्रधानमंत्री एटली ने 20 फरवरी 1947 को घोषणा की, कि 20 जून 1948 तक हर हाल में भारत को आजाद कर दिया जाएगा और इसके लिए माउंटबेटन को नया वायसराय बनाकर भारत भेजा गया।
- **माउंटबेटन योजना/मनबाटनयोजना, डिकी बर्ड योजना / 3 जून की योजना (विभाजन के साथ हस्तांतरण की योजना)**: -
- भारत में कैबिनेट मिशन ने पाकिस्तान की मांग को अस्वीकार कर दिया और एक अंतरिम सरकार तथा संविधान सभा के गठन की घोषणा की। अत :मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की मांग अधूरी रह गयी। अतः उसने 16 अगस्त 1946 को प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस मनाने,
- माउंटबेटन ने समस्या समाधान के लिए 3 जून की योजना प्रस्तुत की जो भारत विभाजन के साथ सत्ता हस्तांतरण की योजना थी। इसे ही माउंटबेटन योजना के नाम से जाता है।
- **माउंटबेटन योजना के अनुसार** भारत और पाकिस्तान इन दो डोमिनियिन को सत्ता का हस्तांतरण किया जाएगा ।
- सिंध और बलूचिस्तान की विधायिका को यह निर्णय लेना था कि वे भारत या पाकिस्तान में से किसके साथ मिलेंगे।
- पंजाब एवं बंगाल की विधायिका को दोहरा निर्णय लेना था-
  - क्या वे पाकिस्तान के साथ मिलेंगे ।
  - यदि हाँ तो क्या इन राज्यों का विभाजन भी होगा ।
- उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत एवं असम के सिलहट जिलें में जनमत संग्रह द्वारा यह पता लगाया जाए कि वे किसके साथ मिलेंगे। (यह जनमत संग्रह पाकिस्तान के पक्ष में गया)
- सीमा विभाजन के लिए एकआयोग गठित हो । रेडक्लिफ की अध्यक्षता में यह आयोग गठित किया गया।
- विभाजन कार्य पूरा होने तक गवर्नर जनरल ही सेना की कमान और प्रशासन के लिए उत्तरदायी होगा।
- कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने इस योजना को स्वीकार कर लिया। कांग्रेस ने डोमिनियन स्टेटस इसलिए स्वीकार किया क्योंकि इससे शांतिपूर्ण और सत्ता हस्तांतरण की प्रक्रिया

अध्याय – 4

मेवाड़ का इतिहास

मेवाड़ के पुरातात्विक स्त्रोत

नगरी का लेख (200 बी-सी-150 बी-सी)

- यह चित्तौड़गढ़ जिलें के प्राचीनत नगर माध्यमिक या नगरी से प्राप्त शिलालेख है, जो जैन या बोद्धों से संबंध्ति है। यह बहुत छोटा शिलालेख है।

नाथ-प्रशस्ति-एकलिंग जी (971 ई.)

- यह उदयपुर के पास स्थित कैलाशपुरी एकलिंग जी के लकुलीश मंदिर में नरवाहनं के समय का संस्कृत भाषा व देवनागरी लिपि का अभिलेख है।

जैन कीर्ति स्तम्भ लेख (13 वीं सदी)

- चित्तौड़ दुर्ग में स्थित रणकपुर के चौमुखा मंदिर (आदिनाथ मंदिर) में सस्कृत भाषा व नागरी लिपि में उत्कीर्ण। इसमें कुम्भा के विषय में जानकारी प्राप्त होती है।

विजय, स्तम्भ प्रशस्ति (1460 ई.)

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित विजय स्तम्भ पर उत्कीर्ण। इसका प्रशस्तिकार कवि अत्रि व उसका पुत्रा महेश भट्ट था। इसमे बाण, हम्मीर मोकल का उल्लेख मिलता है। गणेश, शिव स्तुति मिलती है।
- इसमें कुम्भा द्वारा रचित ग्रन्थों, विरुदों ;दानगुरु, राजगुरु,शैलगुरुद्ध का उल्लेख तथा मालवा व गुजरात की सम्मिलित सेना को हराने का उल्लेख मिलता हैं।

कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.) :-

- यह लेख राजसमंद जिलें के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भस्याम मंदिर (मामादेव का मदिर -वर्तमान नाम) में संस्कृत भाषा एवं नागरी लिपि में पांच शिलाओं पर उत्कीर्ण है। । इसमें भौगोलिक स्थिति का, जनजीवन का, एकलिंग मंदिर का वर्णन, चित्तौड़ का वर्णन- (चित्रांग ताल, दुर्ग, वैष्णव तीर्थ के रूप में) किया गया है।
- इसमें मुख्यतया कुम्भा के विजयों का विस्तार से वर्णन मिलता है।
- इसका रचयिता कान्ह व्यास है। जबकि डॉ। गौरीशंकर हीराचन्द ओझा के अनुसार इसका रचयिता महेश भट्ट है।

जगन्नाथराय प्रशस्ति (1676) :-

- यह जगदीश मंदिर, उदयपुर में उत्कीर्ण है।
- इसमें बाप्पा से सांगा तक की उपलब्धियं का वर्णन है।
- यह मंदिर जगतसिंह प्रथम द्वारा बनाया गया।
- यह पंचायतन शैली का लेख है। जिसे अर्जुन की निगरानी में तथा सूत्राकार भाणा व उसके पुत्रा मुकन्द की अध्यक्षता में बनवाया गया।

राजप्रशस्ति (1676) :-

- यह प्रशस्ति राजसंमद झील के तट पर नौ चौकी स्थान के ताकों में 27 काली पाषाण शिलाओं पर पद्य संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है।
- इसका रचयिता तेलंग ब्राह्मण रणछोड़ भट्ट था।
- इस प्रशस्ति के उत्कीर्ण कर्ता गजध्र मुकुन्दर, अर्जुन, सुखदेव, केशव, सुन्दरलालों, लखों आदि थे।
- मेवाड़ के शासकों की उपलब्धियो का वर्णन मिलता है।
- यह प्रशस्ति जगतसिंह प्रथम तथा राजसिंह के काल की उपलब्धियँ जानने के लिए महत्वपूर्ण स्त्रोत है, यह विश्व की सबसे बड़ी पाषाण उत्कीर्ण प्रशस्ति है।

मेवाड़ का गुहिल वंश –

- मेवाड़ रियासत राजस्थान की सबसे प्राचीन रियासत है, इसे मेदपाट, प्राग्वाट, शिवि जनपद आदि उपनामों से जाना जाता है।
- मेवाड़ का गुहिल वंशी राजघराना एकलिंगजी (शिव) का उपासक था, इसी कारण मेवाड़ के शासक एकलिंगनाथजी को स्वयं के राजा/ईष्ट देव तथा स्वयं को एकलिंगनाथजी का दीवान मानते हैं।
- गुहिल वंश की कुल देवी बाण माता है। मेवाड़ रियासत के सामंत 'उमराव कहलाते थे। मेवाड़ के महाराणा राजधानी छोड़ने से पहले एकलिंगजी से आज्ञा लेते थे, उसे 'आसकाँ कहते थे।
- मेवाड़ के महाराणा 'हिन्दुआ का सूरज कहलाते हैं क्योंकि वो स्वयं को सूर्यवंशी मानते हैं। गुहिल वंश के राजध्वज पर 'उगता सूरज एवं धनुष बाण अंकित है तथा इसमें उदयपुर का राजवाक्य "जो दृढ़ राखै धर्म को, तिहीं राखै करतार है" अंकित है।
- ये शब्द उनके स्वतंत्रता, प्रियता एवं धर्म पर दृढ रहने के सकते देते हैं। मेवाड़ में 1877 में महाराणा के कोर्ट का नाम बदलकर 'इजलास खास कर दिया गया था।
- हूणों के पराभव के बाद राजस्थान में जिन क्षत्रिय (राजपूत) वंशों ने अपने राज्य स्थापित किये उनमें गुहिल वंशीय राजपूत प्रमुख हैं।
- गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने इन्हें विशुद्ध सूर्यवंशीय क्षत्रिय माना है। मेवाड़ राजवंश की स्थापना ईसा की पाँचवी शताब्दी में गुहिल नाम के एक प्रतापी राजा ने की थी।
- भारत की आजादी के समय यह विश्व का सबसे पुराना राजवंश था लगभग 1400 वर्ष की अवधि में 75 शासकों की श्रृंखला ने निर्विघ्न रूप से मेवाड़ पर शासन किया। इस वंश ने शौर्य और पराक्रम की दुनिया में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा है।
- **मेवाड़ रियासत के प्रमुख शासको का कालक्रम निम्न प्रकार से हैं :-**

गुहिल वंश के शासक

राजा गुहिल का जीवन परिचय :-

- विजयभूप ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। यहां इनका शासन सदियों तक रहा। विजयभूप की 6वी पीढ़ी में शिलादित्य नामक व्यक्ति वल्लभीनगर का शासक बना । राजस्थान के आबू में उस

समय परमार वंश का शासन था जिनकी राजधानी चंद्रावती थी । परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है । पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं लेकिन दोनों को एक पुत्र की चाह थी। अगली बार जब पुष्पावती गर्भवती होती है तो वह पुत्र प्राप्ति की मन्नत मांगने के लिए आबू के पास अबुर्दा देवी मंदिर चली जाती है । पुष्पावती के आबू जाने के बाद पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ोसी राज्य ने आक्रमण कर दिया । इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग मारे जाते हैं । शिलादित्य के एक सेवक ने आबू पहुंचकर रानी पुष्पावती को इस बात की सूचना दी । पुष्पावती ने अपने पति शिलादित्य की मृत्यु के दुख में सती होने का फैसला किया लेकिन गर्भावस्था में होने के कारण उनकी सखियों ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। स्थिति ऐसी हो गई थी कि अब वह अपने मायके भी नहीं जा सकती थीं अतः उन्होनें अन्यत्र जाने का फैसला किया । रानी पुष्पावती अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए कुछ दिनों बाद आबू व वल्लभीनगर के मध्य स्थित वीरनगर नामक स्थान पर पहुंची। यहां वह कमलाबाई नामक एक विधवा व निसंतान ब्राह्मणी के घर रहने लगीं । कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गईं। ऐसा माना जाता है कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम गुहिल रख दिया गया । बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।

- बालक गुहिल बचपन से ही होनहार व साहसिक परवर्ती का था । भीलों के साथ उसके अच्छे संबंध थे । वह इन भील बालकों के साथ ही खेलता हुआ बड़ा हो गया । बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने माँ-बाप के बारे में पता चला । गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर पहुंचा लेकिन वहां उस समय तक उसके शत्रु का राज्य नष्ट हो चुका था । अतः गुहिल वल्लभीनगर से पुनः वीरनगर लौट आया। वीरनगर आने के बाद गुहिल ने मेवाड़ पर (ईडर के आस - पास का क्षेत्र) आक्रमण करने का निश्चय किया। उस समय मेवाड़ पर मेद जाति का शासन था । गुहिल ने भीलों से प्रार्थना की कि वो मेवाड़ को जीतने में उसकी मदद करें । गुहिल ने उनसे वादा किया कि इस सहयोग के बदले में वह और उसके वंशज कभी भी भीलों से कर नहीं लेंगे और ना ही कभी भीलों पर अत्याचार करेंगें। 566 ई. में गुहिल ने भीलों की मदद से मेदों को पराजित कर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया ।
- गुहिल या गुहादित्य - गुहिल वंश का संस्थापक था ।
- भगवान राम के पुत्र कुश का वंशज माना जाने वाला गुहिल आनन्दपुर (गुजरात) का निवासी था ।
- गुहिल ने 565 ई. में नागदा (उदयपुर) को अपनी राजधानी बनाकर स्वतंत्र राज्य की स्थापना की ।
- इनके पिता का नाम शिलादित्य एवं माता का नाम पुष्पावती था।

<u>बप्पारावल (734 ई.) :-</u>

- बप्पा रावल (713-810) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा थे। बप्पारावल का जन्म मेवाड़ के महाराजा गुहिल की मृत्यु के 191 वर्ष पश्चात् 712 ई. में ईडर में हुआ। उनके पिता ईडर के शासक महेंद्र द्वितीय थे। बप्पा रावल गुहिल राजपूत राजवंश के वास्तविक संस्थापक थे (संस्थापक-गुहिलादित्य)। इसी राजवंश को सिसोदिया भी कहा जाता है, जिनमें आगे चल कर महान राजा राणा कुम्भा, राणा सांगा, महाराणा प्रताप हुए । बप्पा रावल बप्पा या बापा वास्तव में व्यक्तिवाचक शब्द नहीं है, अपितु जिस तरह "बापू" शब्द महात्मा गांधी के लिए रूढ़ हो चुका है, उसी तरह आदरसूचक "बापा" शब्द भी मेवाड़ के एक नृपविशेष के लिए प्रयुक्त होता रहा है।
- सिसौदिया वंशी राजा कालभोज का ही दूसरा नाम बापा मानने में कुछ ऐतिहासिक असंगति नहीं होती। इसके प्रजासरंक्षण, देशरक्षण आदि कामों से प्रभावित होकर ही संभवतः जनता ने इसे बापा पदवी से विभूषित किया था। महाराणा कुंभा के समय में रचित एकलिंग महात्म्य में किसी प्राचीन ग्रंथ या प्रशस्ति के आधार पर बापा का समय संवत् 810 (सन् 753) ई. दिया है। दूसरे एकलिंग महात्म्य से सिद्ध है कि यह बापा के राज्यत्याग का समय था। बप्पा रावल जब मात्र 3 वर्ष के थे तब यह और इनकी माता असहाय महसूस कर रहे थे, तब भील समुदाय ने दोनों की मदद कर सुरक्षित रखा, बप्पा रावल का बचपन भील जनजाति के बीच रहकर बिता, भील समुदाय ने अरबों के खिलाफ युद्ध में बप्पा रावल का सहयोग किया। यदि बापा का राज्यकाल 30 साल का रखा जाए तो वह सन् 723 के लगभग गद्दी पर बैठा होगा। उससे पहले भी उसके वंश के कुछ प्रतापी राजा मेवाड़ में हो चुके थे, किंतु बापा का व्यक्तित्व उन सबसे बढ़कर था। चित्तौड़ का मजबूत दुर्ग उस समय तक मोरी वंश के राजाओं के हाथ में था।
- परंपरा से यह प्रसिद्ध है कि हारीत ऋषि की कृपा से बापा ने मानमोरी को मारकर इस दुर्ग को हस्तगत किया। टॉड को यहीं राजा मानका वि. सं. 770 (सन् 713 ई.) का एक शिलालेख मिला था जो सिद्ध करता है कि बापा और मानमोरी के समय में विशेष अंतर नहीं है। चित्तौड़ पर अधिकार करना कोई आसान काम न था। अनुमान है कि बापा की विशेष प्रसिद्धि अरबों से सफल युद्ध करने के कारण हुई । सन् 712 ई. में मुहम्मद कासिम से सिंधु को जीता। उसके बाद अरबों ने चारों ओर धावे करने शुरु किए। उन्होनें चावड़ों, मौर्यों, सैंधवों, कच्छेल्लों को हराया। मारवाड़, मालवा, मेवाड़, गुजरात आदि सब भू - भागों में उनकी सेनाएँ छा गईं। इस भयंकर कालाग्नि से बचाने के लिए ईश्वर ने राजस्थान को कुछ महान व्यक्ति दिए जिनमें विशेष रूप से गुर्जर प्रतिहार सम्राट नागभट प्रथम और बापा रावल के नाम उल्लेखनीय हैं। नागभट प्रथम ने अरबों को पश्चिमी राजस्थान और मालवे से मार भगाया। बापा ने यही कार्य मेवाड़ और उसके आस - पास के प्रदेश के लिए किया।

मौर्य (मोरी) शायद इसी अरब आक्रमण से जर्जर हो गए हों। बापा ने वह कार्य किया जो मोरी करने में असमर्थ थे और साथ ही चित्तौड़ पर भी अधिकार कर लिया। बापा रावल ने मुस्लिम देशों पर विजय की अनेक दंतकथाएँ अरबों की पराजय की इस सच्ची घटना से उत्पन्न हुई होंगी।

- बप्पा रावल ने अपने विशेष सिक्के जारी किए थे। इस सिक्के में सामने की ओर ऊपर के हिस्से में माला के नीचे श्री बोप्प लेख है। बाईं ओर त्रिशूल है और उसकी दाहिनी तरफ वेदी पर शिवलिंग बना है। इसके दाहिनी ओर नंदी शिवलिंग की ओर मुख किए बैठा है। शिवलिंग और नंदी के नीचे दंडवत् करते हुए एक पुरुष की आकृति है। पीछे की तरफ सूर्य और छत्र के चिह्न हैं। इन सबके नीचे दाहिनी ओर मुख किए एक गौ खड़ी है और उसी के पास दुध पीता हुआ बछड़ा है। ये सब चिह्न बप्पा रावल की शिवभक्ति और उसके जीवन की कुछ घटनाओं से संबद्ध हैं। परिचय बप्पा रावल को "कालभोज" के नाम से भी जाना जाता है ।
- **जन्म** – (713-14 ई.) इनके समय चित्तौड़ पर मौर्य शासक मान मोरी का राज था 734 ई. में बप्पा रावल ने 20 वर्ष की आयु में मान मोरी को पराजित कर चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार किया वैसे तो गुहिलादित्य / गुहिल को गुहिल वंश का संस्थापक कहते हैं, पर गुहिल वंश का वास्तविक संस्थापक बप्पा रावल को माना जाता है बप्पा रावल को हारीत ऋषि के द्वारा महादेव जी के दर्शन होने की बात मशहूर है एकलिंग जी का मन्दिर - उदयपुर के उत्तर में कैलाशपुरी में स्थित इस मन्दिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल ने करवाया । इसके निकट हारीत ऋषि का आश्रम है।
- **आदि वराह मन्दिर** – यह मन्दिर बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मन्दिर के पीछे बनवाया 735 ई. में हज्जात ने राजपूताने पर अपनी फौज भेजी । बप्पा रावल ने हज्जात की फौज को हज्जात के मुल्क तक खदेड़ दिया । बप्पा रावल की तकरीबन 100 पत्नियाँ थीं, जिनमें से 35 मुस्लिम शासकों की बेटियाँ थीं, जिन्हें इन शासकों ने बप्पा रावल के भय से उन्हें ब्याह दी । 738 ई. - अरब आक्रमणकारियों से युद्ध हुआ ये युद्ध वर्तमान राजस्थान की सीमा के भीतर हुआ बप्पा रावल, प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम व चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय की सम्मिलित सेना ने अल हकम बिन अलावा, तामीम बिन जैद अल उतबी व जुनैद बिन अब्दुलरहमान अल मुरी की सम्मिलित सेना को पराजित किया बप्पा रावल ने सिंधु के मुहम्मद बिन कासिम को पराजित किया बप्पा रावल ने ग़ज़नी के शासक सलीम को पराजित किया । बप्पा रावल बप्पा या बापा वास्तव में व्यक्तिवाचक शब्द नहीं है, अपितु जिस तरह "बापू" शब्द महात्मा गांधी के लिए रूढ़ हो चुका है, उसी तरह आदरसूचक "बापा" शब्द भी मेवाड़ के एक नृपविशेष के लिए प्रयुक्त होता रहा है। सिसौदिया वंशी राजा कालभोज का ही दूसरा नाम बापा मानने में कुछ ऐतिहासिक असंगति नहीं होती। इसके प्रजासंरक्षण, देशरक्षण आदि कामों से प्रभावित होकर ही संभवतः जनता ने इसे बापा पदवी से विभूषित किया था। महाराणा कुंभा के समय में रचित एकलिंग महात्म्य में किसी प्राचीन ग्रंथ या प्रशस्ति के आधार पर बापा का समय संवत् 810 (सन् 753) ई. दिया है। एक दूसरे एकलिंग माहात्म्य से सिद्ध है कि यह बापा के राज्यत्याग का समय था।
- कुछ प्रतापी राजा मेवाड़ में हो चुके थे, किंतु बापा का व्यक्तित्व उन सबसे बढ़कर था। चित्तौड़ का मजबूत दुर्ग उस समय तक मोरी वंश के राजाओं के हाथ में था। परंपरा से यह प्रसिद्ध है कि हारीत ऋषि की कृपा से बापा ने मानमोरी को मारकर इस दुर्ग को हस्तगत किया। टॉड को यहीं राजा मानका वि. सं. 770 (सन् 713 ई.) का एक शिलालेख मिला था जो सिद्ध करता है कि बापा और मानमोरी के समय में विशेष अंतर नहीं है। सिंध में अरबों का शासन स्थापित हो जाने के बाद जिस वीर ने उनको न केवल पूर्व की ओर बढ़ने से सफलतापूर्वक रोका था, बल्कि उनको कई बार करारी हार भी दी थी, उसका नाम था बप्पा रावल। बप्पा रावल गहलौत राजपूत वंश के आठवें शासक थे और उनका बचपन का नाम राजकुमार कालभोज था। वे सन् 713 में पैदा हुए थे और लगभग 97 साल की उम्र में उनका देहान्त हुआ था।
- उन्होनें शासक बनने के बाद अपने वंश का नाम ग्रहण नहीं किया, बल्कि मेवाड़ वंश के नाम से नया राजवंश चलाया था और चित्तौड़ को अपनी राजधानी बनाया। बप्पा रावल एक न्यायप्रिय शासक थे। वे राज्य को अपना नहीं मानते थे, बल्कि शिवजी के एक रूप 'एकलिंग जी' को ही उसका असली शासक मानते थे और स्वयं उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलाते थे। लगभग 20 वर्ष तक शासन करने के बाद उन्होनें वैराग्य ले लिया और अपने पुत्र को राज्य देकर शिव की उपासना में लग गये। महाराणा संग्राम सिंह (राणा सांगा), उदय सिंह और महाराणा प्रताप जैसे श्रेष्ठ और वीर शासक उनके ही वंश में उत्पन्न हुए थे। उन्होनें अरब की हमलावर सेनाओं को कई बार ऐसी करारी हार दी कि अगले 400 वर्षों तक किसी भी मुस्लिम शासक की हिम्मत भारत की ओर आंख उठाकर देखने की नहीं हुई, बहुत बाद में महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण करने की हिम्मत की थी और कई बार पराजित हुआ था।
- अरबों का आक्रमण : यह अनुमान है कि बप्पा रावल की विशेष प्रसिद्धि अरबों से सफल युद्ध करने के कारण हुई । सन् 712 ई. में बप्पा रावल ने मुहम्मद बिन क़ासिम से सिंधु को जीता। अरबों ने उसके बाद चारों ओर धावे करने शुरू किए। उन्होनें चावड़ों, मौर्यों, सैंधवों, कच्छेल्लोंश् और गुर्जरों को हराया। मारवाड़, मालवा, मेवाड़, गुजरात आदि सब भूभागों में उनकी सेनाएँ छा गईं। राजस्थान के कुछ महान् व्यक्ति जिनमें विशेष रूप से प्रतिहार सम्राट नागभट्ट प्रथम और बप्पा रावल के नाम उल्लेख्य हैं। नागभट्ट प्रथम ने अरबों को पश्चिमी राजस्थान और मालवा से मार भगाया। बापा ने यही कार्य मेवाड़ और उसके आस - पास के प्रदेश

अध्याय - 6
राजस्थान के वंश

- परमार का शाब्दिक अर्थ शत्रु को मारने वाला होता है। प्रारम्भ में परमारों का शासन आबू के आस-पास के क्षेत्रों तक ही सीमित था। प्रतिहारों की शक्ति के ह्रास के उपरान्त परमारों की राजनीतिक शक्ति में वृद्धि हुई।

राजस्थान के परमार वंश

- **आबू के परमार** :- आबू के परमार वंश का संस्थापक 'धूमराज' था, लेकिन इनकी वंशावली उत्पलराज से प्रारम्भ होती है। पड़ौसी होने के कारण आबू के परमारों का गुजरात के शासकों से सतत् संघर्ष चलता रहा। गुजरात के शासक मूलराज सोलंकी से पराजित होने के कारण आबू के शासक धरणीवराह को राष्ट्रकूट धवल का शरणागत होना पड़ा। लेकिन कुछ समय बाद धरणीवराह ने आबू पर पुनः अधिकार कर लिया। उसके बाद महिपाल का 1002 ई. में आबू पर अधिकार प्रमाणित होता है। इस समय तक परमारों ने गुजरात के सोलंकियों की अधीनता स्वीकार कर ली। महिपाल के पुत्र धंधुक ने सोलंकियों की अधीनता से मुक्त होने का प्रयास किया। फलतः आबू पर सोलंकी शासक भीमदेव ने आक्रमण किया। धंधुक आबू छोड़कर धार के शासक भोज के पास चला गया। भीमदेव ने विमलशाह को आबू का प्रशासक नियुक्त किया। विमलशाह ने भीमदेव व धंधुक के मध्य पुनः मेल करवा दिया। उसने 1031 ई. में आबू में 'आदिनाथ' के भव्य मंदिर का भी निर्माण करवाया। धंधुक की विधवा पुत्री ने बसन्तगढ़ में सूर्यमंदिर का निर्माण करवाया व सरस्वती बावड़ी का जीर्णोद्धार करवाया।
- **कृष्णदेव के शासनकाल** :- कृष्णदेव के शासनकाल में 1060 ई. में परमारों और सोलंकियों के सम्बन्ध पुनः बिगड़ गए, लेकिन नाड़ौल के चौहान शासक बालाप्रसाद ने इनमें पुनः मित्रता करवाई। कृष्णदेव के पौत्र विक्रमदेव ने महामण्डलेश्वर की उपाधि धारण की। विक्रमदेव का प्रपौत्र धारावर्ष (1163-1219 ई.) आबू के परमारों का शक्तिशाली शासक था। इसने मोहम्मद गौरी के विरुद्ध युद्ध में गुजरात की सेना का सेनापतित्व किया। वह गुजरात के चार सोलंकी शासकों कुमारपाल, अजयपाल, मूलराज व भीमदेव द्वितीय का समकालीन था। उसने सोलंकियों की अधीनता का जुआ उतार फेंका। उसने नाड़ौल के चौहानों से भी अच्छे सम्बन्ध रखे। अचलेश्वर के मन्दाकिनी कुण्ड पर बनी हुई धारावर्ष की मूर्ति और आर-पार छिद्रित तीन भैंसे उसके पराक्रम की कहानी कहते हैं। 'कीर्ति कौमुदी' नामक ग्रंथ का रचयिता सोमेश्वर धारावर्ष का कवि था। उसके पुत्र सोमसिंह के शासनकाल में तेजपाल ने आबू के देलवाड़ा गाँव में 'लूणवसही' नामक नेमिनाथ का मंदिर अपने पुत्र लूणवसही व पत्नी अनुपमादेवी के श्रेयार्थ बनवाया। इसके पश्चात् प्रतापसिंह और विक्रम सिंह आबू के शासक बने। 1311 ई. के लगभग नाडौल के चौहान शासक राव लूम्बा ने परमारों की राजधानी चन्द्रावती पर अधिकार कर लिया और वहाँ चौहान प्रभुत्व की स्थापना कर दी।

मालवा के परमार :- मालवा के परमारों का मूल उत्पत्ति स्थान भी आबू था। इनकी राजधानी उज्जैन या धारानगरी रही, मगर राजस्थान के कई भू-भाग-कोटा राज्य का दक्षिणी भाग, झालावाड़, वागड़, प्रतापगढ़ का पूर्वी भाग आदि इनके अधिकार में थे। मालवा के परमारों का शक्तिशाली शासक मुंज हुआ, वाक्पतिराज, अमोघ-वर्ष उत्पलराज, पृथ्वीवल्लभ, श्रीवल्लभ आदि उसके विरुद थे। मेवाड़ के शासक शक्तिकुमार के शासनकाल में उसने आहड़ को नष्ट किया और चित्तौड़ पर अधिकार कर लिया। उसने चालुक्य शासक तैलप द्वितीय को छः बार परास्त किया, मगर सातवीं बार उससे पराजित हुआ और मारा गया। राजा मुंज को 'कवि वृष' भी कहा जाता था। 'नवसहसांक चरित' का रचयिता पद्मगुप्त और अभिधानमाला' का रचयिता हलायुध उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

- मुंज के बाद सिन्धुराज और भोज प्रसिद्ध परमार शासक हुए। भोज अपनी विजयों और विद्यानुराग के लिए प्रसिद्ध था। भोज ने सरस्वती कण्ठाभरण, राजमृगांक, विद्वज्जनमण्डल, समरांगण, शृंगार मंजरी कथा, कूर्मशतक आदि ग्रंथ लिखे। चित्तौड़ में उसने 'त्रिभुवन नारायण' का प्रसिद्ध शिव मंदिर बनवाया, जो मोकल मंदिर के नाम से भी जाना जाता है, (1429 ई. में राणा मोकल द्वारा जीर्णोद्धार के कारण)। कुम्भलगढ़ प्रशस्ति के अनुसार नागदा में भोजसर का निर्माण भी परमार भोज द्वारा करवाया गया। उसने सरस्वती कण्ठाभरण नामक पाठशाला बनवाई। वल्लभ, मेरुतुंग, वररुचि, सुबन्धु, अमर, राजशेखर, माघ, धनपाल, मानतुंग आदि विद्वान उसके दरबार में थे।
- भोज का उत्तराधिकारी जयसिंह भी एक योग्य शासक था। वागड़ का राजा मण्डलीक उसका सामन्त था। 1135 ई. के लगभग मालवा पर चालुक्य शासक सिद्धराज ने अधिकार कर लिया और परमारों की शक्ति ह्रासोन्मुख हो गई। तेरहवीं शताब्दी में अर्जुन वर्मा के समय मालवा पर पुनः परमारों का आधिपत्य स्थापित हुआ। मगर यह अल्पकालीन रहा। खिलजियों के आक्रमण ने मालवा के वैभव को नष्ट कर दिया और परमार भाग कर अजमेर चले गए।
- **वागड़ के परमार** :- वागड़ के परमार मालवा के परमार कृष्णराज के दूसरे पुत्र डम्बरसिंह के वंशज थे। इनके अधिकार में डूंगरपुर-बाँसवाड़ा का राज्य था, जिसे वागड़ कहते थे। अर्थूणा इनकी राजधानी थी। धनिक, कंकदेव, सत्यराज, चामुण्डराज, विजयराज आदि इस वंश के शासक हुए। चामुण्डराज ने 1079 ई. में अर्थूणा में मण्डलेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया। 1179 ई. में गुहिल शासक सामन्तसिंह ने परमारों से वागड़ छीन कर वहाँ गुहिल वंश का शासन स्थापित कर दिया। अर्थूणा के ध्वस्त खण्डहर आज भी परमार काल की कला और समृद्धि की कहानी बयां करते हैं।

जाट वंश

- राजस्थान के पूर्वी भाग भरतपुर, धौलपुर पर जाट वंश का शासन था।
- भरतपुर के जाटवंश के कुलदेवता भगवान राम के छोटे भाई लक्ष्मण है।
- औरंगजेब के विरुद्ध सबसे पहला संगठित किसान विद्रोह भरतपुर तथा दिल्ली के जाटों द्वारा किया गया।
- 1669 ई. में मथुरा के जाटों ने पहला हिन्दू विद्रोह स्थानीय जाट जमींदार गोकुल जाटके नेतृत्व में किया जिसे मुगल फौजदार हसन् अली खाँ ने दबा दिया तथा तिलपत की लड़ाई में गोकुल जाट मारा गया।
- 1685 ई. में दूसरा जाट विद्रोह राजाराम जाट के नेतृत्व में हुआ। इन्होंने छापामार हमलों के साथ लूटमार की नीति अपनाई।
- राजाराम के नेतृत्व में जाट विद्रोहियों ने सिकंदरा (आगरा) स्थित अकबर के मकबरे को लूटा था। 1688 ई. में बीदर बक्श तथा आमेर के बिशनसिंह ने (rajaram jat history in hindi) राजाराम को परास्त किया।

चूड़ामन जाट (1695-1721 ई.) bharatpur riyasat

- चूड़ामन जाट ने भरतपुर में जाठ राज्य की स्थापना की।
- राजाराम की मृत्यु के बाद चूड़ामन जाट ने विद्रोह की कमान संभाली।
- इसने अपनी शक्ति का विस्तार करते हुए थून के किले का निर्माण करवाया।
- मुगल शासक मुहम्मदशाह के आदेश पर सवाई जयसिंह ने चूड़ामन को हराकर थून के किले पर अधिकार कर लिया। इसके ने चूड़ामन ने आत्महत्या कर ली।

दनसिंह (1723-1755 ई.)

- चूड़ामन के बाद बदनसिंह जाट विद्रोहियों का नेता बना।
- जयपुर शासक सवाई जयसिंह ने बदनसिंह को डीग की जागीर दी तथा ब्रजराज' की उपाधि से सम्मानित किया।
- बदनसिंह ने अपना राज्य विस्तार आगरा तथा भरतपुर तक कर लिया।
- बदनसिंह ने भरतपुर का शासक बनने के बाद डीग के किले में कुछ महल तथा वृंदावन में मंदिर का निर्माण करवाया।
- बदनसिंह ने अपने शासनकाल में ही अपने पुत्र सूरजमल को शासन सौंप दिया था।

महाराजा सूरजमल (1755-1764 ई.)

- सूरजमल के समय भरतपुर, मथुरा, आगरा, मेरठ तथा अलीगढ़ आदि जागीरें इसके अधीन थी।
- बुद्धिमता तथा राजनैतिक कुशलता के कारण सूरजमल को 'जाट जाति का अफलातुन' कहा जाता है।
- इसने अपने राज्य को उस समय भी समृद्ध बनाए रखा जब अन्य राज्य अवनति की ओर अग्रसर थे।
- सूरजमल ने जयपुर के सवाई ईश्वरी सिंह को राज सिहासन प्राप्त करने में सहायता प्रदान की थी।
- 1754 ई. में मराठा सरदार होल्कर ने कुम्हेर (डीग) पर आक्रमण किया लेकिन सूरजमल ने उसके आक्रमण को विफल कर दिया।
- सूरजमल ने अहमदशाह अब्दाली के विरुद्ध मराठों को सैनिक सहायता दी लेकिन इस युद्ध में मराठाओं के हारने के बावजूद भी मराठों को अपने राज्य में शरण दी तथा उन्हें अहमदशाह अब्दाली को सौंपने से मना कर दिया।
- सूरजमल ने 1761 ई. में आगरा के किले पर अधिकार कर लिया था।
- सूरजमल ने लोहागढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया जिसे भारत की स्वतंत्रता तक कोई भी शत्रु जीत नहीं सका।
- डीग के जल महलों का निर्माण सुरजमल ने करवाया।
- ये महल अपनी विशालता, मुगलशेली के उद्यान तथा फव्वारों के लिए प्रसिद्ध है।
- सूरजमल नजीबुद्दौला के विरुद्ध युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए।

महाराजा सूरजमल (1755-1764 ई.)

- सूरजमल के समय भरतपुर, मथुरा, आगरा, मेरठ तथा अलीगढ़ आदि जागीरें इसके अधीन थी।
- बुद्धिमता तथा राजनैतिक कुशलता के कारण सूरजमल को 'जाट जाति का अफलातुन' कहा जाता है।
- इसने अपने राज्य को उस समय भी समृद्ध बनाए रखा जब अन्य राज्य अवनति की ओर अग्रसर थे।
- सूरजमल ने जयपुर के सवाई ईश्वरी सिंह को राज सिहासन प्राप्त करने में सहायता प्रदान की थी।
- 1754 ई. में मराठा सरदार होल्कर ने कुम्हेर (डीग) पर आक्रमण किया लेकिन सूरजमल ने उसके आक्रमण को विफल कर दिया।
- सूरजमल ने अहमदशाह अब्दाली के विरुद्ध मराठों को सैनिक सहायता दी लेकिन इस युद्ध में मराठाओं के हारने के बावजूद भी मराठों को अपने राज्य में शरण दी तथा उन्हें अहमदशाह अब्दाली को सौंपने से मना कर दिया।
- सूरजमल ने 1761 ई. में आगरा के किले पर अधिकार कर लिया था।
- सूरजमल ने लोहागढ़ दुर्ग का निर्माण करवाया जिसे भारत की स्वतंत्रता तक कोई भी शत्रु जीत नहीं सका।
- डीग के जल महलों का निर्माण सुरजमल ने करवाया।
- ये महल अपनी विशालता, मुगलशेली के उद्यान तथा फव्वारों के लिए प्रसिद्ध है।
- सूरजमल नजीबुद्दौला के विरुद्ध युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए।
- इस समय डीग तथा आगरा पर मुगलों का अधिकार था।
- इस समय मुगल बादशाह शाहआलम ने डीग का किला रणजीत सिंह को सौंप दिया।
- अंग्रेजी सेना ने लॉर्ड लेक के नेतृत्व में जब मराठा सरदार होल्कर पर आक्रमण किया तब होल्कर ने रणजीत सिंह के यहाँ शरण ली।

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान की संस्कृति

अध्याय – 1

बोलियाँ एवं साहित्य

राजस्थानी भाषा –

- वक्ताओं की दृष्टि से भारतीय भाषाओं में राजस्थानी भाषा का 7 वाँ स्थान तथा विश्व की भाषाओं में राजस्थानी भाषा का 16वाँ स्थान है।
- उद्योतन सुरी ने 8वीं शताब्दी में अपने ग्रंथ कुवलयमाला में 18 देशी भाषाओं में मरु भाषा को भी सम्मिलित किया था।

उद्भव-

- राजस्थानी भाषा का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ हैं । अर्थात् राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से मानी जाती है ।
- डॉ. एल.पी. टेस्सीटोरी राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) शौरसेनी अपभ्रंश से मानते हैं ।
- डॉ. जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन एवं डॉ. पुरुषोत्तम मोनारिया राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) नागर अपभ्रंश से मानते हैं ।
- के.एम. मुंशी एवं मोतीलाल मेनारिया राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से मानते हैं ।
- अधिकांश विद्वान राजस्थानी भाषा का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से मानते है ।

उत्पत्ति काल-

- राजस्थानी भाषा का उत्पत्ति काल 12 वीं सदी का अन्तीम चरण माना जाता है।

स्वतंत्र अस्तीत्व-

- 16वीं सदी के बाद राजस्थानी भाषा अपने स्वतंत्र अस्तीत्व में आने लगी थी अर्थात् 16वीं सदी के बाद राजस्थानी भाषा का विकास एक स्वतंत्र भाषा के रूप में होने लगा था।
- राजस्थानी एवं गुजराती भाषा का मिला जुला रूप 16 वीं सदी के अंत तक चलता रहा है।

जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन-

- राजस्थानी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग सन् 1912 में जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपने ग्रंथ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया में किया था ।
- राजस्थानी भाषा या राजस्थानी बोलियों का पहली बार वैज्ञानिक अध्ययन जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने किया था।

राजस्थानी भाषा का वर्गीकरण-

1. सर जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन का वर्गीकरण-

- सरजॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपनी पुस्तक या ग्रंथ लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया के 9वें खण्ड में सन् 1912 में राजस्थानी भाषा का स्वतंत्र भाषा के रूप में वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करने वाले प्रथम व्यक्ति है।
- सरजॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने राजस्थानी भाषा को 5 बोलियों में वर्गीकृत किया है जैसे-
  1. पश्चिमी राजस्थानी बोली (मारवाड़ी)-
  2. उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी बोली-
  3. मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली
  4. दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी बोली
  5. दक्षिणी राजस्थानी बोली

1. पश्चिमी राजस्थानी बोली (मारवाड़ी)-

- बोलने वालों की संख्या क्षेत्रफल की दृष्टि से पश्चिमी राजस्थानी बोली सबसे महत्वपूर्ण है।
- पश्चिमी राजस्थानी बोली में पूर्वी मारवाड़ी, उत्तरी मारवाड़ी, पश्चिमी मारवाड़ी, दक्षिणी मारवाड़ी बोली शामिल है।

2. उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी बोली-

उत्तरी पूर्वी राजस्थानी बोली में मेवातीव अहीरवाटी बोली शामिल है।

अहीरवाटी-

- अहीरवाटी बोली राजस्थान में अलवर जिलें के बहरोड़, मुण्डावर, किशनगढ़ के पश्चिमी भाग व कोटपूतली के उत्तरी भाग में बोली जाती है।
- अहीरवाटी बोली बांगरु (हरियाणवी) तथा मेवाती बोली के बीच संधि स्थल की बोली है।
- अहीरवाटी बोली के क्षेत्र को राठ कहा जाता है इसीलिए इसे राठी बोली भी कहते है ।
- जोधराज का हम्मीर रासो महाकाव्य अहीरवाटी बोली में ही लिखा गया है ।

3. मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली-

- मध्यपूर्वी राजस्थानी बोली में ढूंढाड़ी व हाड़ौती बोली शामिल है।

4. दक्षिणी-पूर्वी राजस्थानी बोली-

- दक्षिणी-पूर्वी राजस्थानी बोली में मालवी व रांगड़ी बोली शामिल है ।

मालवी-

- मालवी बोली राजस्थान के झालावाड़, कोटा और प्रतापगढ़ के मालवा से जुड़े भू-भाग में बोली जाती है।
- मालवी बोली, मारवाड़ी बोली तथा ढूंढाड़ी बोली का मिश्रित प्रभाव है।

मालवी की उपबोलियां-

1. निमाड़ी
2. रांगड़ी

निमाड़ी-

- निमाड़ी बोली राजस्थान के दक्षिणी भाग में बोली जाती है।

रांगड़ी-

- रांगड़ी बोली राजपूतों में प्रचलित बोली है ।
- रांगड़ी कर्कश बोली है ।

- o रांगड़ी बोली मारवाड़ी बोली व मालवी बोली के मिश्रण से उत्पन्न मालवा के राजपूतों की बोली है।
- o रांगड़ी बोली राजस्थान में मालव क्षेत्र (झालावाड़ व प्रतापगढ़) में बोली जाती हैं।
- o रांगड़ी बोली मालव क्षेत्र में राजपूतों के द्वारा बोले जाने वाली बोली है ।

5. दक्षिणी राजस्थानी बोली-

- o दक्षिणी राजस्थानी बोली में नीमाड़ी व भीली बोली शामिल है।

2. डॉ. एलपी टेस्सीटोरी का वर्गीकरण-

- o एल. पी. टेस्सीटोरी इटली के निवासी है ।
- o एल.पी. टेस्सीटोरी की कार्य स्थली बीकानेर रही है ।
- o एल.पी. टेस्सीटोरी की मृत्यु सन् 1919 में राजस्थान के बीकानेर जिलें में हुई थी ।
- o एल.पी. टेस्सीटोरी की कब्र बीकानेर में ही है ।
- o बीकानेर के महाराजा गंगासिंह ने डॉ. एल पी टेस्सीटोरी को चारण साहित्य के सर्वेक्षण एवं सर्वे का कार्य सौंपा था ।
- o डॉ. एल पी टेस्सीटौरी ने निम्न ग्रंथ लिखे हैं।

1. राजस्थानी चारण साहित्य एवं ऐतिहासिक सर्वे
2. पश्चिमी राजस्थानी व्याकरण

डॉ. एल पी टेस्सीटौरी ने मालवा व राजस्थान की भाषाओं को दो भागों में विभाजित किया है जैसे-

1. पश्चिमी राजस्थानी बोली या मारवाड़ी बोली
2. पूर्वी राजस्थानी बोली या ढूंढाड़ी बोली

1. पश्चिमी राजस्थानी भाषा-

- o पश्चिमी राजस्थानी भाषा का साहित्यिक रूप डिंगल है।
- o पश्चिमी राजस्थानी भाषा का उद्भव गुर्जर अपभ्रंश से हुआ है।
- o पश्चिमी राजस्थानी भाषा पर सर्वाधिक प्रभाव गुजराती भाषा का रहा है ।

2. पूर्वी राजस्थानी भाषा-

- o पूर्वी राजस्थानी भाषा का साहित्यिक रूप पिंगल है ।
- o पूर्वी राजस्थानी भाषा का उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है।
- o पूर्वी राजस्थानी भाषा पर सर्वाधिक प्रभाव ब्रज भाषा का रहा है ।

पश्चिमी राजस्थान की प्रमुख बोलियां-

मारवाड़ी बोली-

- o मारवाड़ी बोली का प्राचीन नाम मरुभाषा है ।
- o मारवाड़ी बोली के साहित्यिक रूप को डिंगल कहते है।
- o मारवाड़ी बोली का उद्भव (उत्पत्ति) गुर्जर अपभ्रंश से हुआ है।
- o मारवाड़ी बोली का उत्पत्ति काल 8 वीं सदी है।
- o मारवाड़ी बोली पर सर्वाधिक प्रभाव गुजराती भाषा का रहा है ।
- o मारवाड़ी बोली राजस्थान की प्राचीनतम बोली मानी जाती है ।
- o मारवाड़ी बोली पश्चिमी राजस्थान की प्रधान या प्रमुख बोली है।
- o मारवाड़ी बोली राजस्थान में सर्वाधिक क्षेत्रों में बाले जाने वाली बोली है ।
- o जैन साहित्य एवं मीरा की अधिकांश रचना यें मारवाड़ी में है ।
- o राजियारा सोरठा, वेलि क्रिसन् रुकमणी री, ढोला-मरवण, मूमल आदि लोकप्रिय काव्य मारवाड़ी भाषा में ही रचित है।
- o विशुद्ध मारवाड़ी (पुरी शुद्ध मारवाड़ी) बोली राजस्थान में जैसलमेर, बीकानेर, पाली, नागौर, जालौर, सिरोही, शेखावाटी, जोधपुर , व जोधपुर के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है।
- o मारवाड़ी की उपबोलियां-

1. गौड़वाड़ी
2. देवड़ावाटी
3. थली
4. शेखावटी

गौड़वाड़ी-

- गौड़वाड़ी बोली राजस्थान में पाली एवं जालौर जिलें के उत्तरी भाग में बोली जाती है ।

देवड़ावाटी-

- o देवड़ावाटी बोली राजस्थान में सिरोही जिलें में बोली जाती है ।

थली-

- o थली बोली राजस्थान में बाड़मेर व जैसलमेर जिलों में बोली जाती है ।

शेखावाटी-

- o शेखावाटी बोली राजस्थान में झुंझुनू, सीकर तथा चूरू जिलों में बोली जाती है।

मेवाड़ी-

- o मेवाड़ी बोली राजस्थान में भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद उदयपुर एवं उदयपुर के आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती है।
- o मेवाड़ी, मारवाड़ी के बाद दूसरी महत्वपूर्ण बोली है।
- o महाराणा कुंभा द्वारा रचित नाटकों में मेवाड़ी बोली का ही प्रयोग है।
- o मेवाड़ी भाषा के विकसित रूप 12-13वीं शताब्दी में देखने को मिलते है।

बागड़ी-

- o बागड़ी बोली राजस्थान में डूंगरपुर व बांसवाड़ा व दक्षिणी-पश्चिमी उदयपुर के पहाड़ी भाग में बोली जाती है ।
- o गुजरात के समीप होने के कारण बागड़ी बोली पर गुजराती भाषा का प्रभाव अधिक है।
- o भील बोली बागड़ी की ही सहायक बोली है ।

बीकानेरी-

- o बीकानेरी बोली राजस्थान के बीकानेर जिलें में बोली जाती है।

पूर्वी राजस्थान की प्रमुख बोलियां-

ढूंढाड़ी-

- ढूंढाड़ी, पूर्वी राजस्थान की बोली है।
- ढूंढाड़ी बोली राजस्थान के जयपुर, किशनगढ़ (अजमेर), टोंक तथा लावा (टोंक) तथा अजमेर मेरवाड़ा के पूर्वी अंचलों में बोली जाती है।
- ढूंढाड़ी में गद्य एवं पद्य दोनों में प्रचूर साहित्य रचा गया है ।
- दादूदयाल एवं उनके शिष्यों ने ढूंढाड़ी भाषा में रचना की ।
- ढूंढाड़ी बोली सर्वाधिक जनसंख्या के द्वारा बोली जाती है।
- ढूंढाड़ी बोली के उपनाम जयपुरी बोली तथा झाड़सा ही बोली है ।
- ढूंढाड़ी बोली की उपबोलियां-
  1. हाड़ौती
  2. किशनगढ़ी
  3. तोरावाटी
  4. राजावाटी
  5. नागरचोल

हाड़ौती-

- हाड़ौती राजस्थान के हाड़ौती क्षेत्र कोटा, बारां, बूंदी तथा झालावाड़ जिलों में बोली जाती है।
- हाड़ौती का भाषा के रूप में सर्वप्रथम प्रयोग के लॉगकृत हिन्दी व्याकरण में 1815 ई.में हुआ।
- सूर्यमल्ल मिश्रण की रचना यें हाड़ौती बोली में ही है।
- वर्तनी की दृष्टि से हाड़ौती बोली राजस्थान की सभी बोलियों में सबसे कठिन समझी जाती है।

तोरावाटी-

- तोरावाटी बोली राजस्थान के जयपुर के उत्तरी भाग तथा झुंझुनू व सीकर के काटली नदी के आप-पास के क्षेत्रों में बोली जाती हैं, तोरावाटी झुंझुनू जिलें के दक्षिणी भाग, सीकर जिलें के पूर्वी एवं दक्षिणी भाग तथा जयपुर जिलें के उत्तरी भाग में बोली जाती है।

राजावाटी-

- राजावाटी बोली राजस्थान में जयपुर के पूर्वी भाग में बोली जाती है ।

नागरचोल-

- नागरचोल राजस्थान में सवाई.माधोपुर जिलें के पश्चिमी भाग एवं टोंक जिलें के दक्षिणी-पूर्वी भाग में बोली जाती है।

चौरासी-

- चौरासी बोली राजस्थान में जयपुर जिलें के पश्चिमी-पश्चिमी भाग एवं टोंक जिलें के पश्चिमी भाग में बोली जाती है ।

काठेड़ी-

- काठेड़ी बोली राजस्थान में जयपुर के दक्षिणी भाग में बोली जाती है ।

खैराड़ी-

- खैराड़ी बोली राजस्थान में शाहपुरा (भीलवाड़ा), बूंदी के कुछ भागों में बोली जाती है।
- खैराड़ी बोली मेवाड़ी, ढूंढाड़ी, हाड़ौती का मिश्रित रूप है।

मेवाती-

- मेवाती, पूर्वी राजस्थान की बोली है।
- मेवाती बोली राजस्थान में अलवर, भरतपुर, धौलपुर तथा करौली के पूर्वी भाग में बोली जाती है।
- मेवाती बोली ब्रजभाषा से प्रभावित है।
- संत लालदास एवं चरणदास ने मेवाती भाषा में साहित्य की रचना की थी ।
- चरणदास की शिष्याएं दयाबाई. व सहजोबाई. की रचना यें भी मेवाती भाषा में है ।
- मेवाती बोली की उपबोली राठी, मेहण, कठेर है।
- मेवाती बोली पश्चिमी हिन्दी व राजस्थानी भाषा के मध्य सेतु (पुल) का कार्य करने वाली बोली है **।राजस्थानी ब्रज-**
- राजस्थानी ब्रजबोली दिल्ली, उत्तर प्रदेश की सीमा से लगने वाले अलवर, भरतपुर, करौली व धौलपुर जिलों में बोली जाती है।

पंजाबी-

- पंजाबी बोली राजस्थान के श्री गंगानगर व हनुमानगढ़ जिलों में बोली जाती है।

सीताराम लालस-

- पद्म श्री सीताराम लालास ने राजस्थानी भाषा का शब्दकोश बना या इस शब्दकोश में 2 लाख से अधिक शब्द हैं ।
- मारवाड़ी भाषा का प्रथम व्याकरण रामकरण आसोपा है।

राजस्थान की प्रमुख बोलियां (संक्षेप में)

1. मारवाड़ी (मरू भाषा)

जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, पाली, नागौर, सिरोही के कुछ भाग

मारवाड़ी के साहित्य रूप को "डिंगल" कहते हैं ।

2. ढूढाड़ी

जयपुर, किशनगढ़, टोंक, लावा, अजमेर

"दादू संत की रचनाएं इसी बोली में हैं ।"

3. मेवाड़ी (मारवाड़ी की उप बोली)

- उदयपुर, चित्तौड़गढ़ / राजसमंद के आस - पास

4. हाड़ौती (ढूंढाड़ी की उपबोली)

- कोटा, बूंदी, बांरा, झालावाड़

5. मेवाती

- अलवर, भरतपुर

6. अहीरवाटी

- राढ़ क्षेत्र - अलवर / मुंड़ावर तहसील
- जयपुर - कोठपुतली

7. मालवी

- प्रतापगढ़ व झालावाड़ का दक्षिणी क्षेत्र

8. खैराड़ी

- शाहपुरा, बूंदी के हिस्से

राजस्थान के लोक देवता

"नोट- राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में चबूतरेनूमा बने हुए लोकदेवताओं के पूजा स्थल 'देवरे' कहलाते हैं तो अलौकिक शक्ति द्वारा किसी कार्य को करना अथवा करवा देना "पर्चा देना" कहलाता है।"

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता निम्नलिखित हैं -

मारवाड़ के पंच पीर - (1) गोगाजी (2) पाबूजी (3) हड़बूजी (4) रामदेव जी (5) मेहा जी।

पाबू, हड़बू, रामदे, मांगलिया मेहा।
पाँचों पीर पधारजो गोगाजी गेहा।।

(1) गोगाजी चौहान

- राजस्थान के प्रमुख लोक देवता गोगाजी राठौर का वर्णन- पंच पीरों में सर्वाधिक प्रमुख स्थान।
  जन्म - संवत् 1003 में, जन्म स्थान - ददरेवा (चूरू)।
  पिता - जेवरजी चौहान, माता - बाछल दे, पत्नी - कोलुमण्ड (फलौदी) की राजकुमारी केलमदे (मेनलदे)।
- केलमदे की मृत्यु साँप के कांटने से हुईजिससे क्रोधित होकर गोगाजी ने अग्नि अनुष्ठान किया। जिसमें कई. साँप जलकर भस्म हो गये फिर साँपों के मुखिया ने आकर उनके अनुष्ठान को रोककर केलमदे को जीवित करते हैं। तभी से गोगाजी नागों के देवता के रूप में पूजे जाते हैं।
- गोगाजी का अपने मौसेरे भाई.यों अर्जन व सुर्जन के साथ जमीन जायदाद को लेकर झगड़ा था। अर्जन - सुर्जन ने मुस्लिम आक्रान्ताओं (महमूद गजनवी) की मदद से गोगाजी पर आक्रमण कर दिया। गोगाजी वीरतापूर्वक लड़कर शहीद हुए।
- युद्ध करते समय गोगाजी का सिर ददरेवा (चूरू) में गिरा इसलिए इसे शीर्षमेडी (शीषमेडी) तथा धड़ नोहर (हनुमानगढ़) में गिरा इसलिए इसे धड़मेड़ी/धुरमेड़ी/गोगामेड़ी भी कहते हैं।
- बिना सिर के ही गोगाजी को युद्ध करते हुए देखकर महमूद गजनवी ने गोगाजी को जाहिर पीर (प्रत्यक्ष पीर) कहा।
- उत्तर प्रदेश में गोगाजी को जहर उतारने के कारण जहर पीर/जाहर पीर भी कहते हैं।
- गोगामेड़ी का निर्माण फिरोजशाह तुगलक ने करवाया। गोगामेड़ी के मुख्य द्वार पर बिस्मिल्लाह लिखा है तथा इसकी आकृति मकबरेनुमा है। गोगामेड़ी का वर्तमान स्वरूप बीकानेर के महाराजा गंगासिंह की देन है। प्रतिवर्ष गोगानवमी (भाद्रपद कृष्णा नवमी) को गोगाजी की याद में गोगामेड़ी, हनुमानगढ़ में भव्य मेला भरता है।
- गोगाजी की आराधना में श्रद्धालु सांकल नृत्य करते हैं।
- गोगामेड़ी में एक हिन्दू व एक मुस्लिम पुजारी है।
- प्रतीक चिह्न - सर्प।
- खेजड़ी के वृक्ष के नीचे गोगाजी का निवास स्थान माना जाता है।
- गोगाजी की ध्वजा सबसे बड़ी ध्वजा मानी जाती है।
- 'गोगाजी की ओल्डी' नाम से प्रसिद्ध गोगाजी का अन्य पूजा स्थल - साँचौर (जालौर)।
- गोगाजी से सम्बन्धित वाद्य यंत्र - डेरू।
- किसान वर्षा के बाद खेत जोतने से पहले हल व बैल को गोगाजी के नाम की राखी गोगा राखड़ी बांधते हैं।
- सवारी - नीली घोड़ी।
- गोगा बाप्पा नाम से भी प्रसिद्ध है।

(2) पाबूजी राठौड़ -

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता पाबूजी राठौर का वर्णन-
जन्म - 1239 ई.में, जन्म स्थान - कोलुमण्ड गाँव (फलौदी,)।
पिता - धाँधल जी राठौड़, माता - कमलादे, पत्नी - फूलमदेध्सुपियार दे सोढ़ी।

- फूलमदे अमरकोट के राजा सूरजमल सोढ़ा की पुत्री थी।
- पाबूजी की घोड़ी- केसर कालमी (यह काले रंग की घोड़ी उन्हें देवल चारणी ने दी, जो जायल, नागौर के काछेला चारण की पत्नी थी)।
- सन् 1276 ई.में फलौदी के देचू गाँव में देवलचारणी की गायों को जींदराव खींची से छुड़ाते हुए पाबूजी वीर गति को प्राप्त हुए, पाबूजी की पत्नी उनके वस्त्रों के साथ सती हुई। इस युद्ध में पाबूजी के भाई. बूड़ोजी भी शहीद हुए।
- पाबूजी के भतीजे व बूड़ोजी के पुत्र रूपनाथ जी ने जींदराव खींची को मारकर अपने पिता व चाचा की मृत्यु का बदला लिया। रूपनाथ जी को भी लोकदेवता के रूप में पूजते हैं। राजस्थान में रूपनाथ जी के प्रमुख मंदिर कोलुमण्ड (फलौदी) तथा सिम्भूदड़ा (नोखा मण्डी, बीकानेर) में हैं। हिमाचल प्रदेश में रूपनाथ जी को बालकनाथ नाम से भी जाना जाता है।
- पाबूजी की फड़ नायक जाति के भील भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- फड़/पड़ - किसी भी महत्पूर्ण घटना या महापुरुष की जीवनी का कपड़े पर चित्रात्मक अंकन ही फड़/पड़ कहलाता है। फड़ का वाचन केवल रात्रि में होता है। फड़-वाचन के समय भोपा वाद्य यंत्र के साथ फड़ बाँचता है तथा भोपी संबंधित प्रसंग वाले चित्र को लालटेन की सहायता से दर्शकों को दिखाती है तथा साथ में नृत्य भी करती रहती है।
- राजस्थान में फड़ निर्माण का प्रमुख केन्द्र शाहपुरा (भीलवाड़ा)है। वहाँ का जोशी परिवार फड़ चित्रकारी में सिद्धहस्त है। शांतिलाल जोशी व श्रीलाल जोशी प्रसिद्ध फड़ चित्रकार हुए हैं। यह जोशी परिवार वर्तमान में 'द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिका' तथा 'कलिंग विजय के बाद अशोक' विंशय पर फड़ बना रहा है।
- सर्वाधिक फड़ें तथा सर्वाधिक लोकप्रिय/प्रसिद्ध फड़ पाबूजी की फड़ है।
- रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।

- सबसे प्राचीन फड़, सबसे लम्बी फड़ तथा सर्वाधिक प्रसंगों वाली फड़ देवनारायण जी की फड़ है।
- भारत सरकार ने राजस्थान की जिस फड़ पर सर्वप्रथम डाक टिकट जारी किया वह देवनारायण जी की फड़ (2 सितम्बर, 1992 को 5 रु. का डाक टिकट) है।
- देवनारायण जी की फड़ गुर्जर जाति के कुँआरे भोपे जंतर वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।
- भैंसासुर की फड़ का वाचन नहीं होता, इसकी केवल पूजा (कंजर जाति के द्वारा) होती है।
- रामदला-कृष्णदला की फड़ (पूर्वी राजस्थान में) एकमात्र ऐसी फड़ है जिसका वाचन दिन में होता है।
- शाहपुरा के जोशी परिवार द्वारा बनाई. गई. अमिताभ बच्चन की फड़ को बाँचकर मारवाड़ का भोपा रामलाल व भोपी पताशी प्रसिद्ध हुए।
- मारवाड़ में साण्डे (ऊँटनी) लाने का श्रेय पाबूजी को जाता है।
- पाबूजी 'ऊँटों के देवता', 'गौरक्षक देवता' तथा 'प्लेग रक्षक देवता' के रूप में प्रसिद्ध है।
- पाबूजी को 'लक्ष्मण का अवतार' माना जाता है।
- ऊंटों की पालक जाति राई.का/रेबारी/देवासी के आराध्य देव पाबूजी हैं।
- पाबूजी की जीवनी 'पाबू प्रकाश' के रचयिता- आशिया मोड़जी।
- हरमल व चाँदा डेमा पाबूजी के रक्षक थे।
- माघ शुक्ला दशमी तथा भाद्रपद शुक्ला दशमी को कोलुमण्ड गाँव (फलौदी) में पाबूजी का प्रसिद्ध मेला भरता है।
- पाबूजी के पवाड़े/ पावड़े (गाथा गीत) प्रसिद्ध है, जो माठ वाद्य यंत्र के साथ गाये जाते हैं।
- प्रतीक चिह्न - भाला लिए हुए अश्वारोही तथा बायीं ओर झुकी हुई पाग ।

(3) हड़बूजी –

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता हड़बूजी का वर्णन-

- मारवाड़ के पंचपीरों में से एक हड़बूजी के पिता का नाम-मेहाजी सांखला (भुंडेल, नागौर)।
- हड़बूजी बाबा रामदेवजी के मौसेरे भाई. थे।
- गुरु - बालीनाथ।
- संकटकाल में हड़बूजी ने जोधपुर के राजा राव जोधा को तलवार भेंट की और राव जोधा ने इन्हें बेंगटी (फलौदी) की जागीर प्रदान की।
- बेंगटी में इनका प्रमुख पूजा स्थल है। यहाँ हड़बूजी की गाड़ी (छकड़ा / ऊंट गाड़ी) की पूजा होती है। इस गाड़ी में हड़बूजी विकलांग गायों के लिए दूर-दूर से घास भरकर लाते थे।
- हड़बूजी शकुन शास्त्र के ज्ञाता थे।
- हड़बूजी की सवारी सियार मानी जाती है।

(4) रामदेवजी -

राजस्थान के प्रमुख लोक देवता रामदेवजी का वर्णन-

- रामसापीर, रुणेचा रा धणी व पीरां रा पीर नाम से प्रसिद्ध।
- रामदेव जी को कृष्ण का तथा उनके बड़े भाई. बीरमदेव को बलराम का अवतार माना जाता है।
- पिता का नाम-अजमलजी तंवर, माता-मैणादे, पत्नी-नेतलदे (नेतलदे अमरकोट के राजा दल्लेसिंह सोढ़ा की पुत्री थी।)
- लोकमान्यता के अनुसार रामदेवजी का जन्म उंडूकाश्मीर गाँव (शिव-तहसील, बाड़मेर) में भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को हुआ।
- समाधि-रुणेचा (जैसलमेर) में रामसरोवर की पाल पर भाद्रपद शुक्ला दशमी को ली।
- रामदेवजी के लिए नियत समाधि स्थल पर उनकी मुँह बोली बहिन डाली बाई. ने पहले समाधि ली।
- रामदेवजी की सगी बहिनें - लाछा बाई., सुगना बाई ।
- रामसापीर उपनाम से प्रसिद्ध बाबा रामदेवजी ने अपने जीवन काल में कई. परचे (चमत्कार) दिखाये। उन्होनें मक्का से पधारे पंचपीरों को भोजन कराते समय उनका कटोरा प्रस्तुत कर उन्हें चमत्कार दिखाया जिससे मक्का के उन पीरों ने कहा कि हम तो केवल पीर हैं, पर आप तो पीरों के पीर हैं।
- प्रमुख शिष्य-हरजी भाटी, आई.माता।
- गुरु का नाम-बालीनाथ। बालीनाथजी का मन्दिर-मसूरिया, जोधपुर में।
- सातलमेर (पोकरण) में भैरव राक्षस का वध रामदेवजी ने किया।
- नेजा - रामदेवजी की पचरंगी ध्वजा।
- जातरु - रामदेवजी के तीर्थ यात्री।
- रिखियां - रामदेवजी के मेघवाल भक्त।
- जम्मा - रामदेवजी की आराधना में श्रद्धालु लोग रिखियों से जम्मा जागरण (रात्रि कालीन सत्संग) दिलवाते हैं।
- कुष्ठ रोग निवारक देवता।
- हैजा रोग के निवारक देवता।
- सवारी - लीला (हरा) घोड़ा।
- कामड़ पंथ का प्रारम्भ किया।
- राजस्थान में कामड़ पंथियों का प्रमुख केन्द्र पादरला गाँव (पाली) इसके अलावा पोकरण (जैसलमेर) व डीडवाना (डीडवाना-कुचामन) में भी कामड़ पंथी निवास करते हैं।
- **तेरहताली नृत्य**- रामदेवजी की आराधना में कामड़ जाति की महिलाएं मंजीरे वाद्य यंत्र का प्रयोग करके प्रसिद्ध तेरहताली नृत्य करती हैं।
- यह बैठकर किया जाने वाला एकमात्र लोकनृत्य है।
- तेरहताली नृत्य के समय कामड़ जाति का पुरुष तन्दुरा (चौतारा) वाद्य यंत्र बजाता है। इस नृत्य को करते समय नृत्यांगना तेरह मंजीरे (नौं दाहिने पांव पर, दो कोहनी पर तथा दो हाथ में) के साथ तेरह ताल उत्पन्न करते हुए तेरह स्थितियों में नृत्य करती है।
- यह एक व्यावसायिक / पेशेवर नृत्य है।
- प्रसिद्ध तेरहताली नृत्यांगनाएँ - मांगीबाई, दुर्गाबाई ।
- रामदेवजी की फड़ कामड़ जाति के भोपे रावण हत्था वाद्य यंत्र के साथ बाँचते हैं।

Dear Aspirants, here are the our results in differents exams (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

UP Police Constable 2024 - http://surl.li/rbfyn (98 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6WI8&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
MPPSC Prelims 2023	17 दिसम्बर	63 प्रश्न (100 में से)
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये

whatsapp https://wa.link/9h4q2x 1 web.- https://shorturl.at/qClJS

RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)
UP Police Constable	17 February 2024 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

whatsapp https://wa.link/9h4q2x 2 web.- https://shorturl.at/qClJS

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

Our Selected Students

Approx. 563+ students selected in different exams. Some of them are given below -

Photo	Name	Exam	Roll no.	City
	Mohan Sharma S/O Kallu Ram	Railway Group - d	114195120370022	PratapNagar Jaipur
	Mahaveer singh	Reet Level- 1	1233893	Sardarpura Jodhpur
	Sonu Kumar Prajapati S/O Hammer shing prajapati	SSC CHSL tier-1	2006018079	Teh.- Biramganj, Dis.- Raisen, MP
N.A	**Mahender Singh**	EO RO (81 Marks)	N.A.	teh nohar , dist Hanumangarh
	Lal singh	EO RO (88 Marks)	13373780	Hanumangarh
N.A	**Mangilal Siyag**	SSC MTS	N.A.	ramsar, bikaner

	MONU S/O KAMTA PRASAD	SSC MTS	3009078841	kaushambi (UP)
	Mukesh ji	RAS Pre	1562775	newai tonk
	Govind Singh S/O Sajjan Singh	RAS	1698443	UDAIPUR
	Govinda Jangir	RAS	1231450	Hanumangarh
N.A	**Rohit sharma s/o shree Radhe Shyam sharma**	RAS	N.A.	Churu
	DEEPAK SINGH	RAS	N.A.	Sirsi Road , Panchyawala
N.A	**LUCKY SALIWAL s/o GOPALLAL SALIWAL**	RAS	N.A.	AKLERA , JHALAWAR
N.A	**Ramchandra Pediwal**	RAS	N.A.	diegana , Nagaur

	Monika jangir	RAS	N.A.	jhunjhunu
	Mahaveer	RAS	1616428	village-gudaram singh, teshil-sojat
N.A	**OM PARKSH**	RAS	N.A.	Teshil-mundwa Dis- Nagaur
N.A	**Sikha Yadav**	High court LDC	N.A.	Dis- Bundi
	Bhanu Pratap Patel s/o bansi lal patel	Rac batalian	729141135	Dis.-Bhilwara
N.A	**mukesh kumar bairwa s/o ram avtar**	3rd grade reet level 1	1266657	JHUNJHUNU
N.A	**Rinku**	EO/RO (105 Marks)	N.A.	District: Baran
N.A.	**Rupnarayan Gurjar**	EO/RO (103 Marks)	N.A.	sojat road pali
	Govind	SSB	4612039613	jhalawad

FREE SAMPLE
INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

	Jagdish Jogi	EO/RO (84 Marks)	N.A.	tehsil bhinmal, jhalore.
	Vidhya dadhich	RAS Pre.	1158256	kota
	Sanjay	Haryana PCS	96379	Jind (Haryana)

And many others……

FREE SAMPLE

Click on the below link to purchase notes

WhatsApp करें – https://wa.link/9h4q2x

Online Order करें – https://shorturl.at/qClJS

Call करें - 9887809083